पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-9

Hindi

Specimen Copy

June-July

2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	जून	गद्य पाठ-२-दुःख का अधिकार	यशपाल
०२		पद्य पाठ-१०-रहीम के दोहे	संत रहीम
०३		संचयन-२-स्मृति	श्री राम शर्मा
०४		व्याकरण-संधि लेखन-चित्र –लेखन	
०५	जुलाई	गद्य पाठ-३-एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा	बच्छेन्द्रिपाल
०६		पद्य पाठ-११-आदमीनामा	नजीर अकबराबादी
०७		संचयन-३-कुल्लू कुम्हार की उना कोटि	के. विक्रम
०८		व्याकरण-उपसर्ग/प्रत्यय संवाद-लेखन	

गद्य पाठ-2-दुःख अधिकार

लेखक – यशपाल

जन्म – 1903

*पाठ सार- लेखक के अनुसार मनुष्यों का पहनावा ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करता है। परन्तु लेखक कहता है कि समाज में कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम समाज के ऊँचे वर्गों के लोग छोटे वर्गों की भावनाओं को समझना चाहते हैं परन्तु उस समय समाज में उन ऊँचे वर्ग के लोगों का पहनावा ही उनकी इस भावना में बाधा बन जाती है|लेखक अपने द्वारा अनुभव किये गए एक दृश्य का वर्णन करता हुआ कहता है कि एक दिन लेखक ने बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजों को टोकरी में और कुछ को ज़मीन पर रखे हुए देखा। खरबूजों के नज़दीक ही एक ढलती उम्र की औरत बैठी रो रही थी।

लेखक कहता है कि खरबूजे तो बेचने के लिए ही रखे गए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? क्योंकि खरबूजों को बेचने वाली औरत ने तो कपड़े में अपना मुँह छिपाया हुआ था और उसने अपने सिर को घुटनों पर रखा हुआ था और वह बुरी तरह से बिलख -बिलख कर रो रही थी। लेखक कहता है कि उस औरत का रोना देखकर लेखक के मन में दुःख की अनुभूति हो रही थी, परन्तु उसके रोने का कारण जानने का उपाय लेखक को समझ नहीं आ रहा था क्योंकि फुटपाथ पर उस औरत के नज़दीक बैठ सकने में लेखक का पहनावा लेखक के लिए समस्या खड़ी कर रहा था क्योंकि लेखक ऊँचे वर्ग का था और वह औरत छोटे वर्ग की थी।लेखक कहता है कि उस औरत को इस अवस्था में देख कर एक आदमी ने नफरत से एक तरफ़ थूकते हुए कहा कि देखो क्या ज़माना है !जवान लड़के को मरे हुए अभी पूरा दिन नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगा के बैठी है। वहीं खड़े दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे कि अरे, जैसा इरादा होता है अल्ला भी वैसा ही लाभ देता है।

लेखक कहता है कि सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने माचिस की तीली से कान खुजाते हुए कहा अरे, इन छोटे वर्ग के लोगों का क्या है? इनके लिए सिर्फ रोटी ही सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है।इनके लिए बेटा-बेटी, पति-पत्नी, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है। इन छोटे लोगों के लिए कोई भी रिश्ता रोटी नहीं है। जब लेखक को उस औरत के बारे में जानने की इच्छा हुई तो लेखक ने वहाँ पास-पड़ोस की दुकानों से उस औरत के बारे में पूछा और पूछने पर पता लगा कि उसका तेईस साल का एक जवान लड़का था|घर में उस औरत की बहू और पोता-पोती हैं। उस औरत का लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में सब्जियाँ उगाने का काम करके परिवार का पालन पोषण करता था। लड़का परसों सुबह अँधेरे में ही बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। खरबूजे चुनते हुए उसका पैर दो खेतों की गीली

सीमा पर आराम करते हुए एक साँप पर पड़ गया। साँप ने लड़के को डस लिया।लेखक कहता है कि जब उस औरत के लड़के को साँप ने डँसा तो उस लड़के की यह बुढ़िया माँ पागलों की तरह भाग कर झाड़-फूँक करने वाले को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा भी हुई।लेखक कहता है कि पूजा के लिए दान-दक्षिणा तो चाहिए ही होती है। उस औरत के घर में जो कुछ आटा और अनाज था वह उसने दान-दक्षिणा में दे दिया। पर भगवाना जो एक बार चुप हुआ तो फिर न बोला। लेखक कहता है कि ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जा सकता है? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए उस लड़के की माँ के हाथों के ज़ेवर ही क्यों न बिक जाएँ|

लेखक कहता है की भगवाना तो परलोक चला गया और घर में जो कुछ भी अनाज और पैसे थे वह सब उसके अन्तिम संस्कार करने में लग गए। लेखक कहता है कि बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लग गए। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता।क्योंकि समाज में माना जाता है कि कमाई केवल लड़का कर सकता है और उस औरत के घर में कमाई करना वाला लड़का मर गया था तो अगर कोई उधार देने की सोचता तो यह सोच कर नहीं देता कि लौटाने वाला उस घर में कोई नहीं है। यही कारण था कि बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे टोकरी में समेटकर बाज़ार की ओर बेचने के लिए आ गई।

उस बेचारी औरत के पास और चारा भी क्या था? लेखक कहता है कि बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके बाज़ार तो आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए अपने लड़के के मरने के दुःख में बुरी तरह रो रही थी। लेखक अपने आप से ही कहता है कि कल जिसका बेटा चल बसा हो, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली आई है, इस माँ ने किस तरह अपने दिल को पत्थर किया होगा?

लेखक कहता है कि जब कभी हमारे मन को समझदारी से कोई रास्ता नहीं मिलता तो उस कारण बेचैनी हो जाती है जिसके कारण कदम तेज़ हो जाते हैं। लेखक भी उसी हालत में नाक ऊपर उठाए चल रहा था और अपने रास्ते में चलने वाले लोगों से ठोकरें खाता हुआ चला जा रहा था और सोच रहा था कि शोक करने और गम मनाने के लिए भी इस समाज में सुविधा चाहिए और ...दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1 - लेखक किसके रोने का कारण नहीं जान सका ?

(A) बच्चे के

(B) बुढिया के

(C) दूकान वाले के

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 2 - बुढ़िया के दुःख को देख कर लेखक को किसकी याद आई ?

(A) अपनी माँ की

(B) गाँव की

(C) संभ्रांत महिला की

(D) बच्चों की

प्रश्न 3 - समाज में मनुष्यों का अधिकार और उसका दर्जा कैसे सुनिश्चित होता है ?

(A) रहन-सहने

(B) खान-पान

(C) पोशाक से

(D) क, ख दोनों

प्रश्न 4 - खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया के बेटे का क्या नाम था ?

(A) भगवाना

(B) भगावना

(C) भागवाना

(D) भागवन

प्रश्न 5 -पुत्र की मृत्यु के अगले दिन किसे बाज़ार आना पड़ा ?

(A) लेखक को

(B) पडोसी को

(C) बुढिया को

(D) इन में से किसी को नहीं

प्रश्न 6 - बुढ़िया को पुत्र की मृत्यु के अगले ही दिन बाज़ार क्यों आना पड़ा ?

(A) ख़रबूज़े बेचने

(B) सब्ज़ी खरीदने

(C) घूमने

(D) इन में से किसी को नहीं

प्रश्न 7 - कहानी में किसके मरने पर तरह दिन का सूतक कहा गया है ?

(A) बच्चे के

(B) स्त्री के

(C) वृद्ध के

(D) पड़ोसी के

प्रश्न 8 - कहानी में लोगों ने किसे 'पत्थर दिल' कहा है ?

(A) लेखक को

(B) बुढिया को

(C) भगवाना को

(D) पड़ौसिन को

प्रश्न 9 - किसके दुःख को देखकर लेखक को संभ्रांत महिला की याद आई ?

(A) बुढिया को

(B) पड़ोसी को

(C) दुकानवालों को

(D) इनमे से कोई नहीं

प्रश्न 10 - लेखक के अनुसार किसे दुःख मनाने का अधिकार नहीं है ?

(A) बुढ़िया को

(B) पड़ोसी को

(C) गरीबों को

(D) बच्चों को

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों दीजिए-

प्रश्न 1.किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर-किसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उसका दर्जा तथा उसके अधिकारों का ज्ञान होता है।

प्रश्न 2.खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर-खरबूजे बेचने वाली अपने पुत्र की मौत का एक दिन बीते बिना खरबूजे बेचने आई थी। सूतक वाले घर के खरबूजे खाने से लोगों का अपना धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इसलिए उससे कोई खरबूजे नहीं खरीद रहा था।

प्रश्न 3.उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर-उस स्त्री को फुटपाथ पर रोता देखकर लेखक के मन में व्यथा उठे वह उसके दुःख को जानने के लिए बेचैन हो उठा|

प्रश्न 4.उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर-.सांप के काटने के कसरण स्त्री क्र बेटे की मृत्यु हुई|

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1- मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?

उत्तर - मनुष्य के जीवन में पोशाक का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि समाज में किसी व्यक्ति की पोशाक देखकर हमें उस व्यक्ति की हैसियत और जीवन शैली का पता लगत। है। एक अच्छी पोशाक व्यक्ति की समृद्धि का प्रतीक भी कही जा सकती है। हमारी पोशाक हमें समाज में एक निश्चित दर्जा दिलवाती है। पोशाक हमारे लिए कई दरवाज़े खोलती है। कभी कभी वही पोशाक हमारे लिए अड़चन भी बन जाती है।

प्रश्न2 - पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर - कभी कभार ऐसा होता है कि हम नीचे झुक कर समाज के दर्द को जानना चाहते हैं। ऐसे समय में हमारी पोशाक अड़चन बन जाती है क्योंकि अपनी पोशाक के कारण हम झुक नहीं पाते हैं। हमें यह डर सताने लगता है कि अच्छे पोशाक में झुकने से आस पास के लोग क्या कहेंगे। कहीं अच्छी पोशाक में झुकने के कारण हम समाज में अपना दर्जा न खो दें|

प्रश्न3 - लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर - लेखक एक सम्पन्न वर्ग से सम्बन्ध रखता है। उसने अपनी संपन्नता के हिसाब से कपड़े पहने हुए थे। इसलिए वह झुक कर या उस बुढ़िया के पास बैठकर उससे बातें करने में असमर्थ था। इसलिए वह उस स्त्री के रोने का कारण नहीं जान पाया|

प्रश्न4 - भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर - भगवाना पास में ही एक ज़मीन पर कछियारी करके अपना और अपने परिवार का निर्वाह करता था। वह उस ज़मीन में खरबूजे उगाता था। वहाँ से वह खरबूजे तोड़कर लाता था और बेचता था। कभी-कभी वह स्वयं दुकानदारी करता था तो कभी दुकान पर उसकी माँ बैठती थी|

प्रश्न5 - लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर - लड़के के इलाज में बुढ़िया की सारी जमा पूँजी ख़त्म हो गई थी। जो कुछ बचा था वह लड़के के अंतिम संस्कार में खर्च हो गया। अब लड़के के बच्चों की भूख मिटाने के लिए यह जरूरी था कि बुढ़िया कुछ कमा कर लाए। उसकी बहू भी बीमार थी। इसलिए लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया को खरबूज़े बेचने के लिए निकलना पड़ा|

प्रश्न6 - बुढ़िया के दु:ख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर - बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आई कि उस संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु पिछले साल ही हुई थी। पुत्र के शोक में वह महिला ढ़ाई महीने बिस्तर से उठ नहीं पाई थी। उसकी खातिरदारी में डॉक्टर और नौकर लगे रहते थे। शहर भर के लोगों में उस महिला के शोक मनाने की चर्चा थी और यहाँ बाजार में भी सभी उसी तरह बुढ़िया के बारे में बात कर रहे थे।

*(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न1- बाजार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में तरह तरह की बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था कि बेटे की मृत्यु के तुरंत बाद बुढ़िया को बाहर निकलना ही नहीं चाहिए था। कोई कह रहा था कि सूतक की स्थिति में वह दूसरे का धर्म भ्रष्ट कर सकती थी इसलिए उसे नहीं निकलना चाहिए था। किसी ने कहा, कि ऐसे लोगों के लिए रिश्तों नातों की कोई अहमियत नहीं होती। वे तो केवल रोटी को अहमियत देते हैं। अधिकांश लोग उस स्त्री को नफरत की नजर से देख रहे थे। कोई भी उसकी दुविधा को नहीं समझ रहा था।

प्रश्न2 - पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर - पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को उस बुढ़िया के दुख के बारे में पता चला। लेखक को पता चला कि बुढ़िया का इकलौता बेटा साँप के काटने से मर गया था। बुढ़िया के घर में उसकी बहू और पोते पोती रहते थे। बुढ़िया का सारा पैसा बेटे के इलाज में खर्च हो गया था। बहू को तेज बुखार था। इसलिए अपने परिवार की भूख मिटाने के लिए बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा था।

प्रश्न3 - लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर - लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने जो उचित लगा, जो उसकी समझ में आया किया। उसने झटपट ओझा को बुलाया। ओझा ने झाड़-फूँक शुरु किया। ओझा को दान दक्षिणा देने के लिए बुढ़िया ने घर में जो कुछ था दे दिया। घर में नागदेव की पूजा भी करवाई।

प्रश्न4 - लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाशा कैसे लगाया?

उत्तर - लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा पहले तो बुढ़िया के रोने से लगाया। लेखक को लगा कि जो स्त्री खरबूजे बेचने के लिए आवाज लगाने की बजाय अपना मुँह ढ़क कर रो रही हो वह अवश्य ही गहरे दुख में होगी। फिर लेखक ने देखा कि अन्य लोग बुढ़िया को बड़े नफरत की दृष्टि से देख रहे थे। इससे भी लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा लगाया। लेखक ने उसके पड़ोस में एक संपन्न स्त्री के दुःख के साथ जोड़ कर भी समझना चाहा।

प्रश्न5 - इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस पाठ में मुख्य पात्र एक बुढ़िया है जो पुत्र शोक से पीड़ित है। उस बुढ़िया की तुलना एक अन्य स्त्री से की गई है जिसने ऐसा ही दर्द झेला था। दूसरी स्त्री एक संपन्न घर की थी। इसलिए उस स्त्री ने ढ़ाई महीने तक पुत्र की मृत्यु का शोक मनाया था। उसके शोक मनाने की चर्चा कई लोग करते थे। लेकिन बुढ़िया की गरीबी ने उसे पुत्र का शोक मनाने का भी मौका नहीं दिया। बुढ़िया को मजबूरी में दूसरे ही दिन खरबूजे बेचने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। ऐसे में लोग उसे नफरत की नजर से ही देख रहे थे। एक स्त्री की संपन्नता के कारण शोक मनाने का पूरा अधिकार मिला वहीं दूसरी स्त्री इस अधिकार से वंचित रह गई। इसलिए इस पाठ का शीर्षक बिलकुल सार्थक है।

* निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1 -जैसे वायु की लहरें कटी हूई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

उत्तर - कोई भी पतंग कटने के तुरंत बाद जमीन पर धड़ाम से नहीं गिरती। हवा की लहरें उस पतंग को बहुत देर तक हवा में बनाए रखती हैं। पतंग धीरे-धीरे बल खाते हुए जमीन की ओर गिरती है। हमारी पोशाक भी हवा की लहरों की तरह काम करती है। कई ऐसे मौके आते हैं कि हम अपनी पोशाक की वजह से झुककर जमीन की सच्चाई जानने से वंचित रह जाते हैं। इस पाठ में लेखक अपनी पोशाक की वजह से बुढ़िया के पास बैठकर उससे बात नहीं कर पाता है।

प्रश्न 2 - इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर - यह एक प्रकार का कटाक्ष है जो किसी की गरीबी और उससे उपजी मजबूरी का उपहास उड़ाता है। जो व्यक्ति यह कटाक्ष कर रहा है उसे सिक्के का एक पहलू ही दिखाई दे रहा है। हर व्यक्ति रिश्तों नातों की मर्यादा रखना चाहता है। लेकिन जब भूख की मजबूरी होती है तो कई लोगों को मजबूरी में यह मर्यादा लांघनी पड़ती है। उस बुढ़िया के साथ भी यही हुआ था। बुढ़िया को न चाहते हुए भी खरबूजे बेचने के लिए निकलना पड़ा था।

प्रश्न 3 - शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर - शोक मनाने की सहूलियत भगवान हर किसी को नहीं देता है। कई बार जीवन में कुछ ऐसी मजबूरियाँ या जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं कि मनुष्य को शोक मनाने का मौका भी नहीं मिलता। यह बात खासकर से किसी गरीब पर अधिक लागू होती है। पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि गरीब को तो शोक मनाने का अधिकार ही नहीं होता है|

काव्य-पाठ-१०-रहीम के दोहे

भावार्थ:

१-रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन किसी धागे के समान होता है, जिसे कभी भी झटके से नहीं तोड़ना चाहिए बल्कि उसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम का बंधन बहुत नाज़ुक होता है, उसे कभी भी बिना किसी मज़बूत कारण के नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फिर उसे जोड़ा नहीं जा सकता। टूटे हुए धागे को जोड़ने की कोशिश में उस धागे में गाँठ पड़ जाती है। उसी प्रकार किसी से रिश्ता जब एक बार टूट जाता है तो फिर उस रिश्ते को दोबारा पहले की तरह जोड़ा नहीं जा सकता|

२-रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। क्योंकि जब आपका दर्द किसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। अर्थात कोई भी व्यक्ति आपके दर्द को कम नहीं कर सकता।

३-एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय||

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि एक बार में केवल एक कार्य ही करना चाहिए। क्योंकि एक काम के पूरा होने से कई और काम अपने आप पूरे हो जाते हैं। यदि एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। क्योंकि आप एक साथ बहुत कार्यों में अपना शत-प्रतिशत नहीं दे सकते। रहीम कहते हैं कि यह वैसे ही है जैसे किसी पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उस पौधे की जड़ में उसे तृप्त कर देने जितना पानी डाला जाता है। अर्थात जब पौधे में पर्याप्त पानी डाला जाएगा तभी पौधे में फल और फूल आएँगे|

४-चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। रहीम यह भी कहते हैं कि चित्रकूट बहुत घना व् अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। परन्तु रहीम कहते हैं कि ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है। कहने का अभिप्राय यह है कि विपत्ति में व्यक्ति कोई भी कठिन-से-कठिन काम कर लेता है|

५-दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

व्याख्या -रहीम जी का कहना है कि उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं, परंतु उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बहुत कुछ कह देने में समर्थ हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई नट अपने करतब के दौरान अपने बड़े शरीर को सिमटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी के आकार को देख कर उसकी प्रतिभा का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए|

६-धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

व्याख्या - रहीम जी कहते हैं कि कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोडा सा पानी ही धन्य है क्योंकि उस पानी से न जाने कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। लेकिन वह सागर का जल बहुत अधिक मात्रा में होते हुए भी व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पता। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि आप किसी की सहायता न कर सको।

७-नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण किसी के संगीत की ध्वनि से खुश होकर अपना शरीर न्योछावर कर देता है अर्थात अपने शरीर को उसे सौंप देता है। इसी तरह से कुछ लोग दूसरे के प्रेम से खुश होकर अपना धन इत्यादि सब कुछ उन्हें दे देते हैं। लेकिन रहीम कहते हैं कि कुछ लोग पशु से भी बदतर होते हैं जो दूसरों से तो बहुत कुछ ले लेते हैं लेकिन बदले में कुछ भी नहीं देते। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फ़र्ज़ बनता है कि आप उसे बदले में कुछ न कुछ दें।

८-बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि कोई बात जब एक बार बिग़ड़ जाती है तो लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें किसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चाहिए क्योंकि एक बार कोई बात बिगड़ जाए तो उसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो जाता है|

९-रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि किसी बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात बड़ी चीज़ के होने पर किसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि हर एक चीज़ का अपनी-अपनी जगह महत्त्व होता है।

१०-रहिमन निज संपति बिन, कौ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥

व्याख्या -रहीम जी कहते हैं कि जब आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी विपत्ति में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्योंकि मुसीबत में कोई किसी का साथ नहीं देता|

११-रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

व्याख्या -इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के के लिए लिया गया है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्र)पानी (होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे)चून (से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी)विनम्रता (रखना चाहिए जिसके बिना उसका जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।

* बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न ज्ञ (रहीम ने प्रेम के बंधन को किसकी तरह कहा हैरु

९ब० तार

९ड्ढ० धागे

९ऋ० डोरी

९म्० सूत

प्रश्न द्व (रहीम दूसरों से क्या छुपा कर रखने को कहते हैरु

९ब० दु:ख

९ड्ढ० धागा

९ऋ० मजाक

९म्० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ध (रहीम ने एक समय में कितने काम करने को कहा हैरु

९ब० चार

९ड्ढ० दो

९ऋ० एक

९म्० तीन

प्रश्न द्ब (चित्रकूट में कौन रहने गए थेरु

९ब० रहीम

९ड्ढ० राम

९ऋ० कृष्ण

९म्० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न छ (चित्रकूट रहने योग्य क्यों नहीं हैरु

९ब० वह बहुत दूर है

९ड्ढ० वहाँ कुछ नहीं है

९ऋ० वह खण्डार है

९म्० वह बहुत घना वन है

प्रश्न ट (रहीम के दोहे कैसे होते हैरु

९ब० लम्बे

९ड्ढ० बिना अर्थ के

९ऋ० कम शब्द के

९म्० कम शब्दों में अधिक अर्थ बताने वाले

प्रश्न ठ (किसके जल को धन्य कहा गया हैरु

९ब० कीचड़

९द्य० सागर

९ऋ० नदी

९म्० तालाब

प्रश्न ड (किसके जल को व्यर्थ कहा गया हैरु

९ब० कीचड़

९द्य० सागर

९ऋ० नदी

९म्० तालाब

प्रश्न ढ (हिरण किससे खुश होकर अपना शरीर न्यौछावर कर देता हैरु

९ब० संगीत

९द्य० इंसान

९ऋ० गाना

९म्० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ज्ञ० (दूसरों के प्रेम को देखकर लोग क्या त्यागने को तैयार रहते हैरु

९ब० घर

९द्य० सम्पति

९ऋ० धन

९म्० सब-कुछ

प्रश्न ज्ञज्ञ (दूध के फटने पर उसका क्या नहीं बनतारु

९ब० लस्सी

९द्य० घी

९ऋ० मक्खन

९म्० खीर

प्रश्न ज्ञद्व (बात के बिगड़ने पर क्या होता हैरु

९ब० बात फिर नहीं बनती

९द्य० बात फिर बन जाती है

९ऋ० बात टाल दी जाती है

९म्० बात दोहराई जाती है

प्रश्न ज्ञध (बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, इसका क्या अर्थ हैरु

९ब० बड़ी चीज़ काम की होती है

९द्य० छोटी चीज़ काम की होती है

९ऋ0 हर चीज़ का अपना महत्त्व है

९ग्0 इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ज्ञ्द्ध (सूई की जगह क्या काम नहीं आतारु

९ब0 तार

९द्य0 धागे

९ऋ0 डोरी

९ग्0 <u>तलवार</u>

प्रश्न ज्ञ्छ (मनुष्यों के लिए पानी का क्या अर्थ हैरु

९ब0 विनम्रता

९द्य0 चमक

९ऋ0 जल

९ग्0 <u>जीवन</u>

प्रश्न ज्ञ्ट (मोती के लिए पानी का क्या अर्थ हैरु

९ब0 विनम्रता

९द्य0 <u>चमक</u>

९ऋ0 जल

९ग्0 जीवन

प्रश्न ज्ञ्ठ (किसके बिना जीवन असंभव हैरु

९ब0 विनम्रता

९द्य0 चमक

९ऋ0 <u>जल</u>

९ग्0 जीवन

* प्रश्न 1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.'मिले गाँठ परिजाय'-ऐसा रहीम ने किस संदर्भ में कहा है और क्यों?
उत्तर-'मिले गाँठ परिजाय' ऐसा रहीम ने 'प्रेम संबंधों के बारे में कहा है, क्योंकि प्रेम संबंधों की डोर बड़ी नाजुक होती है। एक बार टूट जाने पर जब इसे जोड़ा जाता है तो मन में मलिनता और पिछली बातों की कड़वाहट होने के कारण एक गाँठ-सी बनी रहती है।

प्रश्न 2.बिगरी बात क्यों नहीं बन पाती है? इसके लिए कवि ने क्या दृष्टांत दिया है?
उत्तर-जब मेन में मतभेद और कड़वाहट उत्पन्न होती है, तब बात बिगड़ जाती है और यह बात पहले-सी नहीं हो पाती है। इसके लिए रहीम ने यह दृष्टांत दिया है कि जिस तरह दूध फट जाने पर उससे मक्खन नहीं निकाला जा सकता है, उसी प्रकार बात को पुनः पहले जैसा नहीं बनाया जा सकता है|

प्रश्न 3.कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं। पठित दोहे के आधार पर हिरन के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-हिरन शिकारी की आवाज़ सुनकर उसे दूसरे हिरनों की आवाज़ समझ बैठता है और खुश हो जाता है। वह अपनी सुधि बुधि खोकर उस आवाज़ की ओर आकर अपना तन दे देता है परंतु मनुष्य खुश होकर भी दूसरों को कुछ नहीं देता है। इस तरह कुछ मनुष्य पशुओं से भी हीन होते हैं।|

प्रश्न 4.रहीम का मानना है कि व्यक्ति को अपनी पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, ऐसा क्यों?

उत्तर-रहीम का मानना है कि व्यक्ति को अपने मन की पीड़ा छिपाकर रखनी चाहिए, क्योंकि सहानुभूति और मदद पाने की अपेक्षा से हम अपनी पीड़ा दूसरों के सामने प्रकट तो कर देते हैं परंतु लोग हमारी मदद करने के बजाय हँसी उड़ाते हैं।

प्रश्न छ।'रहिमन देखि बड़ेन को ... दोहे में मनुष्य को क्या संदेश दिया गया हैरु इसके लिए उन्होंने किस उदाहरण का सहारा लिया हैरु

उत्तर-'रहिमन देखि बडेन को ...' दोहे में मनुष्य को यह संदेश दिया गया है कि बड़े लोगों को साथ पाकर छोटे-लोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। छोटे लोगों का काम बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार सुई का काम तलवार नहीं कर सकती है।

प्रश्न ट।'अवध नरेश' कहकर किसकी ओर संकेत किया गया हैरु उन्हें चित्रकूट में शरण क्यों लेनी पड़ीरु

उत्तर-'अवध नरेश' कहकर श्रीराम की ओर संकेत किया गया है। उन्हें चित्रकूट में इसलिए शरण लेनी पड़ी, क्योंकि वे अपने पिता के वचनों के पालन के लिए लक्ष्मण और सीता के साथ वनवास जा रहे थे। वनवास को कुछ समय उन्होंने चित्रकूट में बिताया था

प्रश्न ट।रहीम ने मूल को सींचने की सीख किस संदर्भ में दी है और क्योंरु

उत्तर-कवि रहीम ने मनुष्य को यह सीख दी है कि वह तना, पत्तियाँ, शाखा, फूल आदि को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को ही पानी दे। इससे पौधा खूब फलता-फूलता है। यह सीख कवि ने एक बार में एक ही काम पर मन लगाकर परिश्रम करने के संदर्भ में दी है।

प्रश्न ठ।नट किस कला में पारंगत होता हैरु रहीम ने उसका उदाहरण किसलिए दिया हैरु

उत्तर-नट कुंडली मारकर अपने शरीर को छोटा बनाने की कला में पारंगत होता है। रहीम ने उसका उदाहरण दोहे की विशेषता बताने के संदर्भ में दिया है। दोहा अपने कम शब्दों के कारण आकार में छोटा दिखाई देता है परंतु वह अपने में गूढ अर्थ छिपाए होता है।

प्रश्न ड।व्यक्ति को अपने पास संपत्ति क्यों बचाए रखना चाहिएरु ऐसा कवि ने किसके उदाहरण द्वारा कहा हैरु

उत्तर-व्यक्ति को अपने पास संपत्ति इसलिए बचाए रखना चाहिए क्योंकि उसकी अपनी संपत्ति ही विपत्ति में उसके काम आती है। इसके अभाव में अपना कहलाने वाले भी काम नहीं आते हैं। कवि ने इसके लिए जलहीन कमल और सूर्य का उदाहरण दिया है।

* प्रश्न-2*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.आज की परिस्थितियों में रहीम के दोहे कितने प्रासंगिक हैं? किन्हीं दो उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रहीम द्वारा रचित दोहे नीति और आदर्श की शिक्षा देने के अलावा मनुष्य को करणीय और अकरणीय बातों का ज्ञान देते हुए कर्तव्यरत होने की प्रेरणा देते हैं। समाज को इन बातों की अपेक्षा इन दोहों के रचनाकाल में जितनी थी, उतनी ही। आज भी है। आज भी दूसरों का दुख सुनकर समाज उसे हँसी का पात्र समझता है। इसी प्रकार अपने पास धन न होने पर व्यक्ति की सहायता कोई नहीं करता है। ये तथ्य पहले भी सत्य थे और आज भी सत्य हैं। अतः रहीम के दोहे आज भी पूर्णतया प्रासंगिक हैं।

प्रश्न 2.रहीम ने अपने दोहों में छोटी वस्तुओं का महत्त्व प्रतिपादित किया है। इसे सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि रहीम को लोक जीवन का गहरा अनुभव था। वे इसी अनुभव के कारण जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं की सूक्ष्म परख रखते थे। उन्होंने अपने दोहे में मनुष्य को सीख दी है कि वह बड़े लोगों का साथ पाकर छोटे लोगों की उपेक्षा और तिरस्कार न करें, क्योंकि छोटे लोगों द्वारा जो कार्य किया जा सकता है, वह बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं; जैसे सुई की सहायता से मनुष्य जो काम करता है उसे तलवार की सहायता से नहीं कर सकता है। सुई और तलवार दोनों का ही अपनी-अपनी जगह महत्त्व है|

प्रश्न 3.पठित दोहे के आधार पर बताइए कि आप तालाब के जल को श्रेष्ठ मानते हैं या सागर के जल को और क्यों?

उत्तर-रहीम ने अपने दोहे में सागर में स्थित विशाल मात्रा वाले जल और तालाब में स्थित लघु मात्रा में कीचड़ वाले जल का वर्णन किया है। इन दोनों में मैं भी तालाब वाले पानी को श्रेष्ठ मानता हूँ। यद्यपि समुद्र में अथाह जल होता है, परंतु उसके किनारे जाकर भी जीव-जंतु प्यासे के प्यासे लौट आते हैं। दूसरी ओर तालाब में स्थित कीचड्युक्त पानी विभिन्न प्राणियों की प्यास बुझाने के काम आता है। अपनी उपयोगिता के कारण यह पंकिल जल सागर के खारे जल से श्रेष्ठ है|

*.निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

(क)भाव यह है कि प्रेम का बंधन अत्यंत नाजुक होता है। इसमें कटुता आने पर मन की मलिनता कहीं न कहीं बनी ही रह जाती है। प्रेम का यह बंधन टूटने पर सरलता से नहीं जुड़ता है। यदि जुड़ता भी है तो इसमें गाँठ पड़ जाती है|

(ख) सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

(ख) भाव यह है कि जब हम सहानुभूति और मुद्रदै पाने की आशा से अपना दुख दूसरों को सुनाते हैं तो लोग सहानुभूति दर्शाने और मदद करने की अपेक्षा हमारा मजाक उड़ाना शुरू कर देते हैं। अतः दूसरों को अपना दुख बताने से बचना चाहिए।

(ग) रहिमन मूलहिं सचिबो, फूलै फलै अघाय|

(ग) भाव यह है कि किसी पेड़ से फल-फूल पाने के लिए उसके तने, पत्तियों और शाखाओं को पानी देने के बजाय उसकी जड़ों को पानी देने से ही वह खूब हरा-भरा होता है और फलता-फूलता है। इसी तरह एक समय में एक ही काम करने पर उसमें सफलता मिलती है।

(घ) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं|

(घ) भाव यह है कि किसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, महत्त्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्त्व इसलिए है कि वह कम शब्दों में गूढ अर्थ समेटे रहता है।

ङ) नाद :रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत|

(ड.) भाव यह है कि किसी वस्तु का आकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, महत्त्व होता है उसमें निहित अर्थ का। दोहे का महत्त्व इसलिए है कि वह कम शब्दों में गूढ अर्थ समेटे रहता है|

(च) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

(च) भाव यह है कि वस्तु की महत्ता उसके आकार के कारण नहीं, बल्कि उसकी उपयोगिता के कारण होती है। छोटी से छोटी वस्तु का भी अपना महत्त्व होता है, क्योंकि जो काम सुई कर सकती है उसे तलवार नहीं कर सकती है|

(छ) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

(छ) भाव यह है कि मनुष्य को सदैव पानी बचाकर रखना चाहिए क्योंकि पानी (चमक) जाने पर मोती साधारण पत्थर, सी रह जाती है, पानी (इज्जत) जाने पर मनुष्य स्वयं को अपमानित-सा महसूस करता है और पानी (जल) न रहने पर आटे से रोटियाँ नहीं बनाई जा सकती हैं|

संचयन-पाठ-2-स्मृति

लेखक श्रीराम शर्मा -

जन्म –1896

सार--'स्मृति' कहानी का समूचा कथानक बच्चों की दुनिया के आसपास ही घूमता है। इसमें एक ओर बाल मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण है तो बाल सुलभ क्रीड़ाओं का संचार भी रचा-बसा है। इसके अलावा बालकों के साहस, बुद्धि, उत्साह के कारण खतरे को अनदेखा करने जैसे क्रियाकलापों का भी उल्लेख है। कहानी की शुरुआत में ही बच्चों को कड़ी ठंड में झरबेरी तोड़कर खाते हुए चित्रित किया गया है, जिसमें उन्हें असीम आनंद मिलता है परंतु भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर यह आनंद तुरंत भय में बदल जाता है परंतु भाई का पत्र लिखता देख उसके मन से भय गायब हो जाता है।बच्चे स्कूल जाते हुए उछल-कूद और हँसी मजाक ही नहीं वरन् तरह-तरह की शरारतें भी करते हैं। वे कुएँ में पड़े साँप की फुफकार सुनने के लिए उसमें मिट्टी का ढेला फेंककर हर्षित होते हैं। गलती हो जाने पर वे पिटाई से बचने के लिए तरह-तरह के बहाने सोचते हैं तो समय पर जि मेदारी की अनुभूति करते हैं और जान जोखिम में डालने से भी पीछे नहीं हटते हैं। इस तरह यह कहानी बाल मनोविज्ञान का सफल चित्रण करती है|

१क० निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर-भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक डर गया था। उसे लगा कि उसके बड़े भाई झरबेरी से बेर तोड़-तोड़कर खाने के लिए डाँटेंगे और उसे खूब पीटेंगे|

प्रश्न 2.मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

उत्तर-लेखक के गाँव से मक्खनपुर जाने वाली राह में 36 फीट के करीब गहरा एक कच्चा कुआँ था। उसमें एक साँप न जाने कैसे गिर गया था। मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली उस कुएँ में इसलिए ढेले फेंकती थी ताकि साँप क्रुद्ध होकर फुफकारे और बच्चे उस फुफकार को सुन सकें।

प्रश्न 3.'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'–यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर-यह कथन लेखक की बदहवास मनोदशा को स्पष्ट करता है। जैसे ही लेखक ने टोपी उतारकर कुएँ में ढेला फेंका, उसकी ज़रूरी चिट्ठियाँ कुएँ में जा गिरी। उन्हें कुएँ में गिरता देखकर वह भौंचक्का रह गया। उसका ध्यान चिट्ठियों को बचाने में लग गया। वह यह देखना भूल गया कि साँप को ढेला लगा या नहीं और वह फुसकारा या नहीं|

प्रश्न 4.किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

उत्तर-लेखक द्वारा चिट्ठियों को कुएँ से निकालने के निम्नलिखित कारण हैं-

लेखक को झूठ बोलना नहीं आता था

चिट्ठियों को डाकखाने में डालना लेखक अपनी जिम्मेदारी समझता था।

लेखक को अपने भाई से रुई की तरह पिटाई होने का भय था।
वह साँप को मारना बाएँ हाथ का काम समझता था, जिससे चिट्ठियाँ उठाना उसे आसान लग रहा था|
प्रश्न 5.साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?
उत्तर-साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाईं-
उसने मुट्ठीभर मिट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया।
उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ डंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा विष डंडे पर उगल दिया।
प्रश्न 6.कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-कुएँ में चिट्ठियाँ गिर जाने पर लेखक ने रोना-धोना छोड़कर भयानक निर्णय लिया। उसने अपनी और अपने छोटे भाई की पाँचों धोतियों को एक-दूसरे से बाँधा। इसके एक छोर में डंडा बाँधकर उसे कुएँ में उतार दिया और दूसरे सिरे को कुएँ की डेंग में बाँधकर भाई को पकड़ा दिया। अब उन धोतियों के सहारे लेखक कुएँ में उतर गया और कुएँ के धरातल से चार पाँच गज ऊपर लटककर साँप को देखने लगा। साँप भी फन फैलाए लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। लेखक ने कुएँ की दीवार में पैर जमाकर कुछ मिट्टी गिराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया। वह मिट्टी पर मुँह मार बैठा|इस बीच लेखक ने डंडे से जब चिट्ठियाँ सरकाईं तो साँप ने जोरदार प्रहार किया और अपनी शक्ति के प्रमाण स्वरूप डंडे पर तीन-चार जगह विषवमन कर दिया। इससे लेखक का साहस बढ़ा। उसने चिट्ठियाँ उठाने का प्रयास किया तो साँप ने वार किया और डंडे से लिपट गया। इस क्रम में साँप की पूँछ का पिछला भाग लेखक को छू गया। यह देख लेखक ने डंडे को पटक दिया और चिट्ठियाँ उठाकर धोती में बाँध दिया, जिन्हें उसके भाई ने ऊपर खींच लिया। अब लेखक ने कुएँ की दीवार से कुछ मिट्टी साँप की दाहिनी ओर फेंकी। साँप उस पर झपटा। अब लेखक ने डंडा खींच लिया। लेखक ने मौका देखा और जैसे-तैसे हाथों के सहारे सरककर छत्तीस फुट गहरे कुएँ से ऊपर आ गया|

प्रश्न 7.इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?
उत्तर-बालक प्रायः शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मिलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फॅफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं। बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में विहार करने में भी असीम आनंद मिलता है। वे झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर खाने में खूब आनंद लेते हैं।
प्रश्न 8.मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं’–का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-मनुष्य किसी कठिन काम को करने के लिए अपनी बुद्धि से योजनाएँ तो बनाता है, किंतु समस्याओं का वास्तविक सामना होते ही ये योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। तब उसे यथार्थ स्थिति को देखकर

काम करना पड़ता है। इस पाठ में लेखक ने सोचा था कि कुएँ में उतरकर वह डंडे से साँप को मार देगा और चिट्ठियाँ उठा लेगा, परंतु कुएँ का कम व्यास देखकर उसे लगा कि यहाँ तो डंडा चलाया ही नहीं जा सकता है। उसने जब साँप को फन फैलाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया तो साँप को मारने की योजना उसे एकदम मिथ्या और उलटी लगने लगी|

प्रश्न 9.फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरलेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चिंता समाप्त हो गई। उसे लगा कि कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इसलिए वह फल की चिंता छोड़कर कुएँ में घुस गया|

(ख)-प्रश्न-२-लघु-प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.बड़े भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर लेखक की क्या दशा हुई और क्यों ?

उत्तर-बड़े भाई द्वारा बुलाई जाने की बात सुनकर लेखक घबरा गया। उसे बड़े भाई द्वारा पिटाई किए जाने का भय सता रहा था। वह कडी सरदी और ठंडी हवा के प्रकोप के बीच अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था। कहीं बेर खाने के अपराध में ही तो उसे नहीं बुलाया जा रहा था।

प्रश्न 2.लेखक को अपने पिटने का भय कब दूर हुआ?

उत्तर-लेखक अपने बड़े भाई के बुलाने पर सहमा-सा घर आया तो देखा कि उसके बड़े भाई पत्र लिख रहे हैं। भाई को पत्र लिखते देखकर वह समझ गया कि उसे इन पत्रों को डाकखाने में डालने के लिए ही बुलवाया होगा। यह सोचकर उसे अपने पिटने का भय जाता रहा।

प्रश्न 3.डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने क्या-क्या तैयारियाँ कीं और क्यों?

उत्तर-डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने निम्नलिखित तैयारियाँ कीं-

उसने अपना मजबूत बबूल का डंडा साथ लिया।

उसने और उसके छोटे भाई ने अपने-अपने कानों को धोती से बाँधा।

उसने अपना मजबूत बबूल का डंडा साथ लिया।

उनकी माँ ने उन्हें भुनाने के लिए चने दिए|

उन्होंने सिर पर टोपियाँ लगाईं।

उन्होंने ये तैयारियाँ इसलिए की क्योंकि सरदी के मौसम में तेज़ हवा हड्डियों को भी कँपा रही थी|

प्रश्न 4.लेखक को अपने डंडे से इतना मोह क्यों था?

उत्तर-लेखक को अपने डंडे से इतना मोह इसलिए था, क्योंकि-

उसने इस डंडे से अब तक कई साँप मारे थे।

वह इस डंडे से आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष आम तोड़ता था।

उसे अपना मूक डंडा सजीव-सा लगता था।

प्रश्न 5.साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?
उत्तर-साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाईं|
उसने मुट्ठीभर मिट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया।
उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ डंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा विष डंडे पर उगल दिया।
प्रश्न 6.कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तरधोना छोड़कर भयानक निर्णय लिया। उसने अपनी -कुएँ में चिट्ठियाँ गिर जाने पर लेखक ने रोना-दूसरे से बाँधा। इसके एक छोर में डंडा बाँधकर उसे -और अपने छोटे भाई की पाँचों धोतियों को एक कुएँ में उतार दिया और दूसरे सिरे को कुएँकी डेंग में बाँधकर भाई को पकड़ा दिया। अब उन धोतियों के सहारे लेखक कुएँ में उतर गया| और कुएँ के धरातल से चार पाँच गज ऊपर लटककर साँप को देखने लगा। साँप भी फन फैलाए लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। लेखक ने कुएँ की दीवार में पैर जमाकर कुछ मिट्टी गिराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया। वह मिट्टी पर मुँह मार बैठा।इस बीच लेखक ने डंडे से जब चिट्ठियाँ सरकाईं तो साँप ने जोरदार प्रहार किया और अपनी शक्ति के प्रमाण स्वरूप डंडे पर तीन-चार जगह विषवमन कर दिया। इससे लेखक का साहस बढ़ा। उसने चिट्ठियाँ उठाने का प्रयास किया तो साँप ने वार किया और डंडे से लिपट गया। इस क्रम में साँप की पूँछ का पिछला भाग लेखक को छू गया। यह देख लेखक ने डंडे को पटक दिया और चिट्ठियाँ उठाकर धोती में बाँध दिया, जिन्हें उसके भाई ने ऊपर खींच लिया। अब लेखक ने कुएँ की दीवार से कुछ मिट्टी साँप की दाहिनी ओर फेंकी। साँप उस पर झपटा। अब लेखक ने डंडा खींच लिया। लेखक ने मौका देखा और जैसेतैसे हाथों के सहारे सरककर -छत्तीस फुट गहरे कुएँ से ऊपर आ गया।
प्रश्न 7.इस पाठ को पढ़ने के बाद किनसुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है-किन बाल-?
उत्तरबालक प्रायः- शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मिलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फँफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं।बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में विहार करने में भी असीम आनंद मिलता है। वे झरबेरी के बेर तोड़तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर -खाने में खूब आनंद लेते हैं।
प्रश्न 8.मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभीका –'कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं-आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तरमनुष्य किसी कठिन काम को- करने के लिए अपनी बुद्धि से योजनाएँ तो बनाता है, किंतु समस्याओं का वास्तविक सामना होते ही ये योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। तब उसे यथार्थ स्थिति को देखकर काम करना पड़ता है। इस पाठ में लेखक ने सोचा था कि कुएँ में उतरकर वह डंडे से साँप को मार देगा और चिट्ठियाँ उठा लेगा, परंतु कुएँ का कम व्यास देखकर उसे लगा कि यहाँ तो डंडा चलाया ही नहीं जा सकता है। उसने जब साँप को फन फैलाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया तो साँप को मारने की योजना उसे एकदम मिथ्या और उलटी लगने लगी|

प्रश्न 9.फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है’-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चिंता समाप्त हो गई। उसे लगा कि कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इसलिए वह फल की चिंता छोड़कर कुएँ में घुस गया|

*-दीर्घ प्रस्नोत्तर-

प्रश्न 1.बड़े भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर लेखक की क्या दशा हुई और क्यों?

उत्तर-बड़े भाई द्वारा बुलाई जाने की बात सुनकर लेखक घबरा गया। उसे बड़े भाई द्वारा पिटाई किए जाने का भय सता रहा था। वह कडी सरदी और ठंडी हवा के प्रकोप के बीच अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था। कहीं बेर खाने के अपराध में ही तो उसे नहीं बुलाया जा रहा था।

प्रश्न 2.लेखक को अपने पिटने का भय कब दूर हुआ?

उत्तर-लेखक अपने बड़े भाई के बुलाने पर सहमा-सा घर आया तो देखा कि उसके बड़े भाई पत्र लिख रहे हैं। भाई को पत्र लिखते देखकर वह समझ गया कि उसे इन पत्रों को डाकखाने में डालने के लिए ही बुलवाया होगा। यह सोचकर उसे अपने पिटने का भय जाता रहा।

प्रश्न 3.डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने क्या-क्या तैयारियाँ कीं और क्यों?

उत्तर-डाकखाने में पत्र डालने जाते समय लेखक ने निम्नलिखित तैयारियाँ कीं-

उसने और उसके छोटे भाई ने अपने-अपने कानों को धोती से बाँधा।

उसने अपना मजबूत बबूल का डंडा साथ लिया।

उनकी माँ ने उन्हें भुनाने के लिए चने दिए। उन्होंने सिर पर टोपियाँ लगाईं।

उन्होंने ये तैयारियाँ इसलिए की क्योंकि सरदी के मौसम में तेज़ हवा हड्डियों को भी कँपा रही थी|

प्रश्न 4.लेखक को अपने डंडे से इतना मोह क्यों था?

उत्तर-लेखक को अपने डंडे से इतना मोह इसलिए था, क्योंकि-

उसने इस डंडे से अब तक कई साँप मारे थे।

वह इस डंडे से आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष आम तोड़ता था।

उसे अपना मूक डंडा सजीव-सा लगता था|

प्रश्न 5.कुएँ में साँप होने का पता लेखक एवं अन्य बच्चों को कैसे चला?

उत्तर-लेखक और उसके साथ अन्य बच्चे मक्खनपुर पढ़ने जाते थे। उसी रास्ते में छत्तीस फुट गहरा सूखा कच्चा कुआँ था। लेखक ने एक स्कूल से लौटते हुए उसमें झाँक कर देखा और एक ढेला इसलिए फेंका ताकि वह ढेले की आवाज़ सुन सके, पर ढेला गिरते ही उसे एक फुसकार सुनाई दी। इस तरह वे जान गए कि कुएँ में साँप है।

प्रश्न 6.लेखक पर बिजली-सी कब गिर पड़ी?

उत्तर-लेखक अपने छोटे भाई के साथ मक्खनपुर डाक में चिट्ठियाँ डालने जा रहा था। उसके साथ उसका छोटा भाई भी था। उस रास्ते में एक कुआँ पड़ता था जिसमें साँप गिर पड़ा था। लेखक के मन में उसकी फुसकार सुनने की इच्छा जाग्रत हुई। उसने एक हाथ से टोपी उतारी और उसी समय दूसरे हाथ से ढेला कुएँ में फेंका। टोपी उतारते ही उसमें रखी चिट्ठियाँ कुएँ में चक्कर काटते हुए गिर रही थी। चिट्ठियों की ऐसी स्थिति देखकर लेखक पर बिजली-सी गिर पड़ी।

*विस्तृत उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखक को माँ की याद कब और क्यों आई?

उत्तर-लेखक अपने भाई द्वारा लिखी चिट्ठियाँ डाक में डालने जा रहा था कि उसके मन में कुएँ में गिरे साँप की फुफकार सुनने की इच्छा जाग उठी। उसने ढेला फेंकने के लिए ज्यों ही अपने सिर से टोपी उतारी उसमें रखी टोपियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर पड़ीं। लेखक निराशा, पिटने के भय, और उद्वेग से रोने का उफ़ान नहीं सँभाल पा रहा था। इस समय उसे माँ की गोद की याद आ रही थी। वह चाहता था कि माँ आकर उसे छाती से लगा ले और लाड-प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी। उसे विश्वास था कि माँ ही उसे इस विपदा में सच्ची सांत्वना दे सकती है।

प्रश्न 2.'लेखक चिट्ठियों के बारे में घर जाकर झूठ भी बोल सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया' इसके आलोक में लेखक की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताइए कि आप लेखक के चरित्र से किन-किन विशेषताओं को अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-लेखक जानता था कि जिस कुएँ में उससे चिट्ठियाँ गिर गई हैं, उसमें जहरीला साँप रहता था। उसके पास से चिट्ठियाँ उठाना अत्यंत जोखिम भरा था। वह चिट्ठियों के बारे में घर आकर झूठ-भी बोल सकता था, पर उसने झूठ बोलने के बजाय कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का जोखिम भरा कार्य किया। लेखक के चरित्र में सत्यनिष्ठा थी, जो उसके झूठ बोलने की सोच पर भारी पड़ रही थी। वह साहसी और बुद्धिमान था, जिसके बल पर वह पहले भी कई साँप मार चुका था। उसका संकल्प और आत्मबल मज़बूत था जिसके सहारे वह असंभव को भी सरल काम समझ रहा था। इसी के बल पर उसने योजनानुसार अपना काम किया। मैं लेखक के चरित्र से सत्यनिष्ठ, प्रत्युत्पन्नमति, साहसी, बुद्धि से काम करने की कला तथा दृढ़ संकल्प जैसे गुण अपनाना चाहता हूँ।

प्रश्न 3.कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने में उसके भाई का कितना योगदान था? इससे लेखक के चरित्र में किन-किन जीवन मूल्यों की झलक मिलती है?

उत्तर-लेखक कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का काम संभवतः करने की सोच भी न पाता, यदि उसे अपने भाई का सहयोग न मिलता। लेखक ने दृढ़ संकल्प से अपनी दुविधा पर विजयी पाई। उसने चिट्ठियाँ निकालने के लिए अपनी दो धोतियाँ तथा अपने छोटे भाई की दोनों धोतियों के अलावा वह धोती भी बाँधी जिसमें भुनवाने के लिए चने बँधे थे, को परस्पर बाँधा। अब उसके छोर पर एक डंडा बाँधकर उसने कुएँ में लटका दिया और दूसरे हिस्से को कुएँ की डेंग में बाँधकर इसे अपने भाई को पकड़ा दिया। इसके बाद वह चिट्ठियाँ उठाने के लिए कुएँ में उतर गया। अदम्य साहस और बुद्धि कौशल का परिचय देते हुए चिट्ठियाँ निकालने में वह सफल हो गया। इस कार्य से

लेखक के साहसी होने, बुद्धिमान होने, योजनानुसार कार्य करने तथा भाई से असीम लगाव रखने जैसे उच्च जीवन मूल्यों की झलक मिलती है।

प्रश्न 4.लेखक ने किस तरह अत्यंत सूझ-बूझ से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया? 'स्मृति' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए। इससे आपको क्या सीख मिलती है?
उत्तर-'स्मृति' पाठ में लेखक को उसके भाई ने डाक में डालने की चिट्ठियाँ दी थीं। उसकी असावधानी के कारण ये चिट्ठियाँ उस कुएँ में गिर गईं, जिसमें विषधर बैठा था। उसके पास से चिट्ठियाँ उठाना शेर के जबड़े से माँस खींचने जैसा कठिन और जोखिम भरा था, जिसमें जरा-सी चूक जानलेवा साबित हो सकती थी। यद्यपि ऐसा करने के पीछे एक ओर उसमें जिम्मेदारी का भाव था, तो दूसरी ओर भाई से पिटने का भय परंतु उसने अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास, धैर्य, विपरीत परिस्थितियों में बुद्धिमानी से काम करने की कला के कारण वह मौत के मुँह से चिट्ठियाँ उठा लिया और मौत को ठेंगा दिखा दिया। इस घटना से हमें यह सीख भी मिलती है कि ऐसी घटनाओं को हमें प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए और ऐसा कार्य करने से पहले अपने से बड़ों की राय-सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ताकि हम किसी अनहोनी का शिकार न बनें।
प्रश्न 5.'स्मृति' कहानी हमें बच्चों की दुनिया से सच्चा परिचय कराती है तथा बाल मनोविज्ञान का सफल चित्रण करती है। इससे आप कितना सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-'स्मृति' कहानी का समूचा कथानक बच्चों की दुनिया के आसपास ही घूमता है। इसमें एक ओर बाल मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण है तो बाल सुलभ क्रीड़ाओं का संचार भी रचा-बसा है। इसके अलावा बालकों के साहस, बुद्धि, उत्साह के कारण खतरे को अनदेखा करने जैसे क्रियाकलापों का भी उल्लेख है। कहानी की शुरुआत में ही बच्चों को कड़ी ठंड में झरबेरी तोड़कर खाते हुए चित्रित किया गया है, जिसमें उन्हें असीम आनंद मिलता है परंतु भाई द्वारा बुलाए जाने की बात सुनकर यह आनंद तुरंत भय में बदल जाता है परंतु भाई का पत्र लिखता देख उसके मन से भय गायब हो जाता है।बच्चे स्कूल जाते हुए उछल-कूद और हँसी मजाक ही नहीं वरन् तरह-तरह की शरारतें भी करते हैं। वे कुएँ में पड़े साँप की फुफकार सुनने के लिए उसमें मिट्टी का ढेला फेंककर हर्षित होते हैं। गलती हो जाने पर वे पिटाई से बचने के लिए तरह-तरह के बहाने सोचते हैं तो समय पर जि मेदारी की अनुभूति करते हैं और जान जोखिम में डालने से भी पीछे नहीं हटते हैं। इस तरह यह कहानी बाल मनोविज्ञान का सफल चित्रण करती है|

व्याकरण-

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। जैसे - विद्या + आलय = विद्यालय।

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

दीर्घ संधि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मिलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ = आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ /

अ +अ=आ

अ + आ = आ --> हिम + आलय = हिमालय /

अ+ आ=आ

अ + आ =आ--> पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

क+अ

अ+आ=आ

आ + अ = आ --> विद्या + अर्थी = विद्यार्थी /

आ +अ=आ

आ + आ = आ --> विद्या + आलय = विद्यालय

आ+आ=आ

(ख) इ और ई की संधि

इ + इ = ई --> रवि + इंद्र = रवींद्र ; मुनि + इंद्र = मुनींद्र

इ +इ =ई इ +इ =ई

इ + ई = ई --> गिरि + ईश = गिरीश ; मुनि + ईश = मुनीश

इ+ई=ई इ+ ई =ई

ई + इ = ई- मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई- नदी + ईश = नदीश ; मही + ईश = महीश .

(ग) उ और ऊ की संधि

उ + उ = ऊ- भानु + उदय = भानूदय ; विधु + उदय = विधूदय

उ+ उ=ऊ उ+ उ =ऊ

उ + ऊ = ऊ- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ; सिधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि

उ+ ऊ =ऊ उ+ ऊ= ऊ

ऊ + उ = ऊ- वधू + उत्सव = वधूत्सव ; वधू + उल्लेख = वधूल्लेख

ऊ +उ=ऊ

ऊ + ऊ = ऊ- भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व ; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

गुण संधिइसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे -

अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ +इ = ए

अ + ई = ए ; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए ; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

अ + उ = ओ ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ;

अ +उ =ओ

आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव

आ +उ =ओ

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि ;

आ + ऊ = ओ महा + ऊर्मि = महोर्मि।

अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

अ +ऋ =अर

(घ) आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

आ +ऋ =अर

वृद्धि संधि

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

अ + ए = ऐ ; एक + एक = एकैक ;

अ +ए =

अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

अ +ऐ=ऐ

आ + ए = ऐ ; सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ + ओ = औ वन + औषधि = वनौषधि ;

आ + ओ = औ महा + औषधि = महौषधि ;

अ + औ = औ परम + औषध = परमौषध ;

आ + औ = औ महा + औषध = महौषध

यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ + अ = य् + अ ; यदि + अपि = यद्यपि

ई + आ = य् + आ ; इति + आदि = इत्यादि।

ई + अ = य् + अ ; नदी + अर्पण = नद्यर्पण

ई + आ = य् + आ ; देवी + आगमन = देव्यागमन

(घ)

उ + अ = व् + अ ; अनु + अय = अन्वय

उ + आ = व् + आ ; सु + आगत = स्वागत

उ + ए = व् + ए ; अनु + एषण = अन्वेषण

ऋ + अ = र् + आ ; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

अयादि संधि

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए + अ = अय् + अ ; ने + अन = नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ ; गै + अक = गायक

(ग) ओ + अ = अव् + अ ; पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ ; पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ ; नौ + इक = नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। उज्जवल

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

प + ज + ब्ज अप् + ज = अब्ज

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता क् + म = ं वाक + मय = वाङ्मय च् + न = ं अच् + नाश = अंनाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन

त् + झ = ज्झ उत् + झटिका = उज्झटिका त् + ट = ट्ट तत् + टीका = तट्टीका

त् + ड = ड्ड उत् + डयन = उड्डयन त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास त् + श = च्छ उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -

त् + ह = द्ध उत् + हार = उद्धार त् + ह = द्ध उत् + हरण = उद्धरण

त् + ह = द्ध तत् + हित = तद्धित

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे -

अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद आ + छ = आच्छ आ + छादन = आच्छादन

इ + छ = इच्छ संधि + छेद = संधिच्छेद उ + छ = उच्छ अनु + छेद = अनुच्छेद

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे -

म् + च् = ं किम् + चित = किंचित म् + क = ं किम् + कर = किंकर

म् + क = ं सम् + कल्प = संकल्प म् + च = ं सम् + चय = संचय

म् + त = ं सम् + तोष = संतोष म् + ब = ं सम् + बंध = संबंध

म् + प = ं सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे -

म् + म = म्म सम् + मति = सम्मति म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -

म् + य = ं सम् + योग = संयोग म् + र = ं सम् + रक्षण = संरक्षण

म् + व = ं सम् + विधान = संविधान म् + व = ं सम् + वाद = संवाद

म् + श = ं सम् + शय = संशय म् + ल = ं सम् + लग्न = संलग्न

है। जैसे - म् + स = ं सम् + सार = संसार

(ट) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे -

र् + न = ण परि + नाम = परिणाम र् + म = ण प्र + मान = प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -

भ् + स् = ष अभि + सेक = अभिषेक नि + सिद्ध = निषिद्ध वि + सम + विषम

विसर्ग-संधि : ह

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ; अधः + गति = अधोगति ; मनः + बल = मनोबल

(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -

निः + आहार = निराहार ;

निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

निः + चल = निश्चल ; निः + छल = निश्छल ; दुः + शासन = दुश्शासन

(घ) विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे -

नमः + ते = नमस्ते ;

निः + संतान = निस्संतान ;

दुः + साहस = दुस्साहस

(ङ) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

निः + कलंक = निष्कलंक ;

चतुः + पाद = चतुष्पाद ;

निः + फल = निष्फल

(च) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे -

निः + रोग = निरोग ;

निः + रस = नीरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे -

अंतः + करण = अंतःकरण

***लेखन**-चित्र वर्णन के उदाहरण

दिए गए चित्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।

1.

प्रस्तुत चित्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

२-

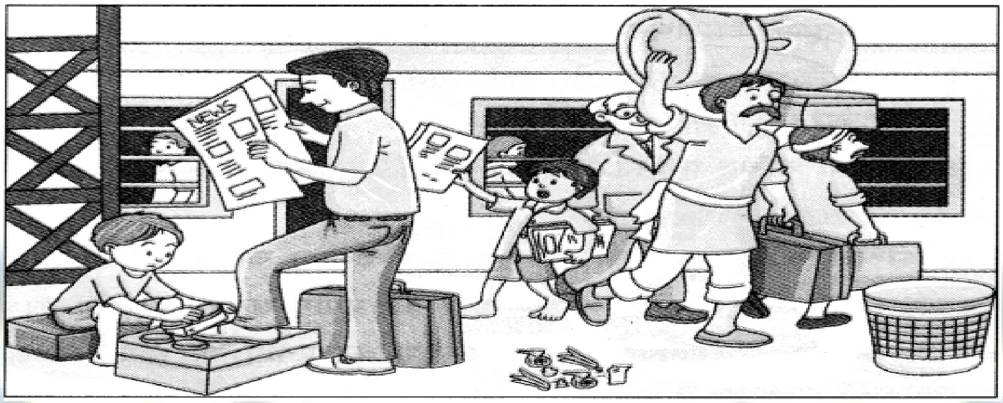

यह चित्र रेलवे प्लेटफार्म का है। जिसमें एक गाड़ी खड़ी है। गाड़ी के अंदर यात्री बैठे हुए हैं। दो कुली सिर पर सामान रखकर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं। जिस व्यक्ति का सामान है वह उनके साथ चल रहा है। एक बच्चा हाथ में अखबार लिए बेचने के लिए घूम रहा है। दूसरी तरफ एक बच्चा अपनी बूट-पॉलिश की दुकान लगाए बैठा है। एक व्यक्ति हाथ में समाचार-पत्र लिए पढ़ रहा है। बच्चा उनके जूते की पॉलिश कर रहा है। किनारे पर एक कूड़ेदान रखा हुआ है, लेकिन कूड़ा चारों ओर फैला हुआ है। सरकार की ओर से साफ़-सफ़ाई की ओर ध्यान दिया जाता है। मगर जब तक प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य नही निभाएँगे तब तक सभी प्रयत्न विफल होते रहेंगे|

3

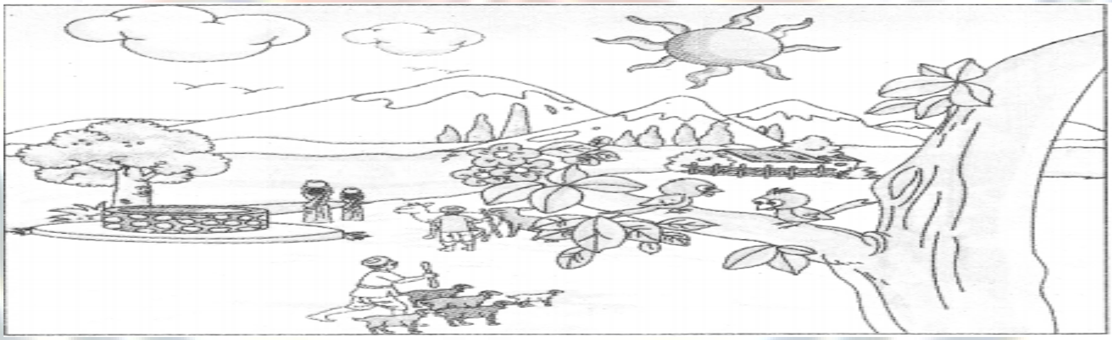

यह दृश्य प्रात:काल सूर्योदय का है। आसमान का रंग सूर्य की लालिमा लिए हुए एक अनूठी छटा बिखेर रहा है।कुछ पक्षी उड़ रहे हैं कुछ पेड़ की डाल पर बैठे उड़ने की तैयारी में हैं। दो घर दिखाई दे रहे हैं जिनके बाहर सुन्दर फूलों के पौधे हैं। सामने कुआँ है उसके पास एक बड़ा वृक्ष है। दो स्त्रियाँ सिर पर घड़े रखकर कुएँ से पानी लेने जा रही हैं। चरवाहा भेड़ों को चराने के लिए ले जा रहा है। पूरा दृश्य मनमोहक छटा बिखेर रहा है। प्रात:काल का समय सबसे उत्तम समय माना जाता है। इस समय भ्रमण करने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

पाठ-३-एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

लेखिका -बचेंद्री पाल

जन्म – 1954

पाठ सार:

बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लिए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बहुत पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए चला गया था जिससे कि वह बचेंद्री पाल वाले दल के 'बेस कैम्प 'पहुँचने से पहले बर्फ के गिरने के कारण बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है।यहीं से बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि लोगों के द्वारा बचेंद्री पाल को बताया गया कि शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर तूफानों को झेलना पड़ता है, विशेषकर जब मौसम खराब होता है। जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खिसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मिला। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण बचेंद्री पाल के अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को साफ़-साफ़ कह दिया कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई आसान काम नहीं है, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने बचेंद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेंद्री पाल और उनके साथियों को खुंभु हिमपात की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ते को चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके साथियों का ध्यान इस पर भी दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। जिसके कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि में पहुँचने से पहले उन्हें 'बेस कैंप' और उनके साथियों को एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से अब बचेंद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी घबराए हुए थे। बेस कैंप पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। बचेंद्री पाल हैरान होकर खड़ी

रह गई। बचेंद्री पाल कहती हैं कि दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज़्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीनू मेहता ने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ीतिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और उनके पहले दल के तकनीकी कार-्यों के बारे में उन्हें विस्तार से सारी जानकारी दी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनका तीसरा दिन हिमपात से कैंपएक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित था। रीता - टॉकी था-साथ चढ़ रहे थे। उनके पास एक वॉकी-गोंबू तथा बचेंद्री पाल साथ, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप एक-पर पँहुचने वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं। जब अप्रैल में बचेंद्री पाल कैंप बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि वे इस चढ़ाई के लिए बिल्कुल ही नई सीखने वालीं हैं और एवरेस्ट उनका पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और बचेंद्री पाल से कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ बचेंद्री पाल के कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा कि बचेंद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में थी। वह गहरी नींद में सोइ हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग उनके सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। एक लंबा बर्फ का पिंड उनके कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका एक बहुत बड़ा बर्फ का टुकड़ा बन गया था। लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से बचेंद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे । उन्होंने बचेंद्री पाल के चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और बचेंद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि अगली सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्प-दो पर पहुँच गए थे। बचेंद्री पाल और उनके दल के नेता कर्नल

खुल्लर ने पिछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में कुछ इस तरह कहा कि यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड्डियां टूटी थी उन्हें बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेंद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे कि क्या वह डरी हुई है? इसके उत्तर में बचेंद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फिर से पूछने पर कि क्या वह वापिस जाना चाहती है? इस बार बचेंद्री पाल ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया कि वह वापिस नहीं जाना चाहती।बचेंद्री पाल कहती हैं कि दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। उन्होंने बर्फीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेंद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने बचेंद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय वगैरह पी लेकिन बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश भी की। मगर बचेंद्री पाल को की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेंद्री पाल को देखकर चौंक गया और उसने बचेंद्री पाल से कहा कि उसने इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया? बचेंद्री पाल ने भी उसे दृढ़तापूर्वक कहा कि वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसीलिए वह इस दल में आई हुई है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि साउथ कोल पृथ्वी ‘ जगह के नाम से प्रसि ’पर बहुत अधिक कठोरद्ध है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चा ॅकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकीहलकी हवा चल रही थी-, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। बचेंद्री पाल और उनके साथियों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेंद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोचसमझकर उठाया। क्योंकि वहाँ एक छोटी - सी भी गलती मौत का कारण बन सकती थी। बचेंद्रीपाल कहती हैं कि दो घंटे से भी कम

समय में ही वे सभी शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी गति से चलता रहे तो वे शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें महसूस हुआ कि सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।बचेंद्री पाल कहती हैं कि दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें विचार आया कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली बचेंद्री पाल प्रथम भारतीय महिला थी।बचेंद्री पाल कहती हैं कि एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभी के सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई। ख़ुशी के इस पल में बचेंद्री पाल को अपने माता-पिता का ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को प्रोत्साहित किया और लक्ष्य तक पहुँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया कि दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बहुत प्रसन्न है। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। बचेंद्री पाल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि वे बचेंद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लिए बचेंद्री पाल के माता-पिता को बधाई देना चाहते हैं। वे बोले कि देश को बचेंद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा|

* बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

प्रश्न ज्ञ (एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू कब चल पड़ा थाऋ

९ब० ठ मार्च को

९द्य० छ मार्च को

९ऋ० ज्ञ७ मार्च को

९म्० ड मार्च को

प्रश्न द्द (बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को कहाँ से देखा थाऋ

९ब० हवाई जहाज़ से

९द्य० बेस कैम्प से

९ऋ० एवरेस्ट के तल से

९म्० नमचे बाज़ार

प्रश्न ध (शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को कहाँ से आने वाले तूफानों को झेलना पड़ता हैऋ

९ब० पूर्वी दक्षिणी पहाड़ी-से

९द्य० दक्षिणपूर्वी पहाड़ी से-

९ऋ० उत्तरपूर्वी पहाड़ी से-

९म्० दक्षिणीपश्चिमी पहाड़ी से-

प्रश्न द्ब (द्ट मार्च को पैरिच पहुँचते ही लेखिका को कौन सा दु:ख भरा समाचार मिला।

९ब० बर्फ से रास्ता बंद होने का

९द्य० अभियान स्थगित होने का

९ऋ० शेरपा कुली के घायल होने का

९म्० एक शेरपा कुली की मृत्यु का

प्रश्न छ (कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को सहज भाव से क्या स्वीकार करने को कहाऋ

९ब० कठिन चढाई

९द्य० मृत्यु

९ऋ० परेशानियाँ

९म्० इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न ट (कैंपएक कितनी ऊँचाई पर था-रु

९ā0 ट७७ मी.

९ǐ0 छ७७७ मी.

९ǣ0 ट७७७ मी.

९ƒ0 ड७७७ मी.

प्रश्न ठ (रसोई सहायक की मृत्यु किस कारण हो गई थीरु

९ā0 हिमपात के कारण

९ǐ0 जलवायु के सही न होने के कारण

९ǣ0 हिमखंडों के खिसकने के कारण

९ƒ0 बिमारी के कारण

प्रश्न ड (लेखिका के अनुसार अचानक हमेशा ही खतरनाक स्थिति कैसे बन जाया करती थीरु

९ā0 बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के अचानक से गिरने से

९ǐ0 अत्यधिक बर्फ गिरने से

९ǣ0 बर्फ के गलेशियर बनने के कारण

९ƒ0 बीमार पड़ने के कारण

प्रश्न ढ (कौन सा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित थारु

९ā0 पहला

९ǐ0 दूसरा

९ǣ0 तीसरा

९ƒ0 पाँचवा

प्रश्न ज्ञ७ (कैंप-एक पर पँहुचने वाली दो महिलाएँ कौन थींरु

९ā0 डॉ मीनू मेहता तथा बचेंद्री पाल

९ǐ0 रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल

९ǣ0 डॉ मीनू मेहता तथा रीता गोंबू

९ƒ0 इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ज्ञज्ञ (द्वढ अप्रैल को कैंप-चार कितनी ऊँचाई पर लगाया गया।

९ā0 टढ७७ मीटर

९ǐ0 डढ७७ मीटर

९ऋ० ठढ७७ मीटर

९म्0 छढ७७ मीटर

प्रश्न ञ्चद्द (बचेंद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में कौन सफ़ल हो गए थेरु

९ब्0 लोपसांग

९ड्ढ0 तशारिंग

९ऋ० एन.डी .शेरपा

९म्0 लोपसांग व् तशारिंग

प्रश्न ञ्चध् (बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश किसने कीरु

९ब्0 की

९ड्ढ0 जय

९ऋ० मीनू

९म्0 शेरपा

प्रश्न ञ्चद्ब ('पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से क्या प्रसिद्ध हैरु

९ब्0 ईस्ट कोल

९ड्ढ0 वेस्ट कोल

९ऋ० नार्थ कोल

९म्0 साउथ कोल

प्रश्न ञ्चछ (बिना ऑक्सीजन के कौन चढ़ाई करने वाला थारु

९ब्0 की

९ड्ढ0 जय

९ऋ० अंगदोरजी

९म्0 बचेंद्री

प्रश्न ञ्चट (बर्फ काटने के लिए किसका इस्तेमाल करना पड़ारु

९ब्0 फावड़े का

९ड्ढ स्विस छुरी का

९ऋ० नुकीली छड़ी का

९म्0 इनमें से किसी का नहीं

प्रश्न ज्ञठ (कितने समय में वे सभी शिखर कैंप पर पहुँच गएरु

९ं0 पाँच घंटे

९ं0 दो घंटे

९ं0 सात घंटे

९ं0 तीन घंटे

प्रश्न ज्ञड (ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक ऑक्सीजन की दर कितनी होती हैरु

९ं0 दो लीटर

९ं0 पाँच लीटर

९ं0 तीन लीटर

९ं0 चार लीटर

प्रश्न ज्ञढ (लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर कब खड़ी थीरु

९ं0 द्ध मई ज्ञढडद्ध के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

९ं0 द्द मई ज्ञढडद्ध के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

९ं0 द्ढ मई ज्ञढडद्ध के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

९ं0 द्ज्ञ मई ज्ञढडद्ध के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

प्रश्न द्ग (लेखिका एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली कौन सी महिला बनीरु

९ं0 दूसरी

९ं0 पाँचवी

९ं0 पहली

९ं0 तीसरी

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-**

प्रश्न ज्ञ।अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा थारु

उत्तर-अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे|

प्रश्न द्द।लेखिका को सागरमाथा क्यों अच्छा लगारु

उत्तर-लेखिका को 'सागरमाथा' नाम इसलिए अच्छा लगा क्योंकि सागरमाथा का अर्थ है- सागर का माथा और एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न द्ध।लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगारु

उत्तर-लेखिका को तेज हवाओं के कारण उठी हुई चक्करदार बर्फीली आकृति ध्वज जैसी प्रतीत हुई।

प्रश्न द्ध।हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुएरु

उत्तर-हिमस्खलन से दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और नौ लोग घायल हुए़

प्रश्न छ।मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहारु

उत्तर-मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि ऐसे साहसिक अभियानों में होने वाली मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए़

प्रश्न ट।रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुईरु

उत्तर-रसोई सहायक की मृत्यु स्वास्थ्य के प्रतिकूल जलवायु में काम करने के कारण हुई

प्रश्न ठ।कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गयारु

उत्तर-कैंप-चार ठढ७७ मीटर ऊँची 'साउथ कोल' नामक जगह पर द्ध्ढ अप्रैल को लगाया गया था़

प्रश्न ड।लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय किस तरह दियारु

उत्तर-लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए कहा कि वह नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

प्रश्न ढ।लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दीरु

उत्तर-लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने कहा- मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा़

***-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

प्रश्न ज्ञ।नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगारु

उत्तर-नजदीक से एवरेस्ट को देखने पर लेखिका भौंचक्की रह गई। उसे टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ ऐसी लग रही थीं मानो कोई बरफ़ीली नदी बह रही हो।

प्रश्न द्ध।डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दींरु

उत्तर-डॉ. मीनू मेहता ने लेखिका को अल्युमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का निर्माण करने, लट्टों और रस्सियों का उपयोग करने, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधने तथा अग्रिम दल के अभियांत्रिकीकार्यों की विस्तृत जानकारी दी

प्रश्न ध।तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में क्या कहारु

उत्तर-तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में कहा, "तुम पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो पहले ही प्रयास में शिखर पर पहुँच जाना चाहिए।"

प्रश्न द्ब।लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थीरु

उत्तर-लेखिका के अभियान-दल में यों तो लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा आदि अनेक सदस्य थे। किंतु उन्हें जिन साथियों के संग यात्रा करनी थी, वे थे-की, जय और मीनू।

प्रश्न छ।लोपसंगा ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ कियारु

उत्तर-लोपसांग ने तंबू का रास्ता साफ़ करने के लिए अपनी स्विस छुरी निकाली। उन्होंने लेखिका के आसपास जमे बड़े-बड़े हिमपिंडों को हटाया और लेखिका के चारों ओर जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई किया। उन्होंने बड़ी मेहनत से लेखिका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।

प्रश्न ट।साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शूरू कीरु

उत्तर-'साउथ कोल' कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की चढ़ाई की तैयारी शुरू की। उसने खाना, कुकिंग गैस तथा ऑक्सीजन सिलेंडर इकट्‌टे किए। उसके बाद वह चाय बनाने की तैयारी करने लगी।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के दीर्घ उत्तर लिखिए-

प्रश्न ज्ञ।उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत करायारु

उत्तर-उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल को खंभु हिमपात की स्थिति की जानकारी देते हुए कहा कि उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है और फल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिन्हित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

प्रश्न द्व।हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैंरु

उत्तर-बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही हिमपात कहलाता है। ग्लेशियर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गिर जाती हैं। इस अवसर पर स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है कि धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अकसर बर्फ़ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं।

प्रश्न ध।लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ पिंड का वर्णन किस तरह किया हैरु

उत्तर-लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ के पिंड का वर्णन करते हुए कहा है कि वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी

ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैंप-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सिर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा कि एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी।

प्रश्न द्व।लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?
उत्तर-जय बचेंद्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बचेंद्री के साथ पर्वत-शिखर पर जाना था। शिखर कैंप पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बचेंद्री उसके लिए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लिवाने के लिए पहुँची। जय को यह कल्पना नहीं थी कि बचेंद्री उसकी चिंता करेंगी और उसे लिवी लाने के लिए आएँगी। इसलिए जब उसने बचेंद्री पाल को चाय-जूस लिए आया देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया।

प्रश्न छ।एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।
उत्तर-पाठ से ज्ञात होता है कि एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए कुल पाँच कैंप बनाए गए। उनके दल का पहला कैंप ट००० मीटर की ऊँचाई पर था जो हिमपात से ठीक ऊपर था। दूसरा कैंप-चार ठ्द्व०० मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया था। कैंप-तीन ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर बनाया गया था। यहाँ नाइलोन के तंबू लगाए गए थे। एक कैंप साउथकोल पर बनाया गया था। यहीं से अभियान दल को एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी थी। इसके अलावा एक बेस कैंप भी बनाया गया था।

प्रश्न ट।चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?
उतर-जब बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तो वहाँ चारों ओर तेज़ हवा के कारण बर्फ़ उड़ रही थी। बर्फ़ इतनी अधिक थी कि सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। पर्वत की शंकु चोटी इतनी तंग थी कि दो आदमी वहाँ एक साथ खड़े नहीं हो सकते थे। नीचे हजारों मीटर तक ढलान ही ढलान थी। अतः वहाँ अपने आपको स्थिर खड़ा करना बहुत कठिन था। उन्होंने बर्फ के फावड़े से बर्फ़ तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

प्रश्न ठ।सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?
उतर-एवरेस्ट पर विजय पाने के अभियान के दौरान लेखिको बचेंद्री पाल अपने साथियो 'जय', की 'मीनू' के साथ चढाई कर रही थी, परंतु वह इनसे पहले साउथ कोल कैंप पर जा पहुँची क्योंकि वे बिना ऑक्सीजन के भारी बोझ लादे चढ़ाई कर रहे थे। लेखिका ने दोपहर बाद इन सदस्यों की मदद करने के लिए एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भर लिया और बरफ़ीली हवा में कैंप से बाहर

निकल कर उन सदस्यों की ओर नीचे उतरने लगी। उसके इस कार्य से सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय मिलता है।

*-निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न ज्ञ।एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उत्तर-एवरेस्ट की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ना एक महान अभियान है। इसमें पग-पग पर जान जाने का खतरा होता है। अतः यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए, तो उसे सहज घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए।

प्रश्न द्व।सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

उत्तर-आशय यह है कि ग्लेशियरों के बहने से बरफ़ में हलचल होने से बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें अचानक गिर जाती हैं। इससे धरातल पर दरार पड़ जाती है। यही दरारें हिम-विदर में बदल जाती हैं जो पर्वतारोहियों की मृत्यु का कारण बन जाती है। इसका ख्याल ही मन में भय पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से यह भी जानकारी मिल गई थी कि इस अभियान दल को अपने अभियान के दौरान ऐसे हिमपात का सामना करना ही पड़ेगा।

प्रश्न ध।बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पिता का ध्यान आया।

उत्तर-जब बचेंद्री पाल हिमालय की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँच गई तो उसने घुटने के बल बैठकर बर्फ़ को माथे से छुआ। बिना सिर नीचे झुकाए हुए ही अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उसँने इन्हें एक लाल कपड़े में लपेटा। थोड़ी सी पूजा की। फिर इस चित्र तथा हनुमान चालीसा को बर्फ में दबा दिया। उस समय उसे बहुत आनंद मिला। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने माता-पिता को याद किया।

काव्य–पाठ ११-आदमीनामा

कवि -नज़ीर अकबराबादी

जन्म – झ्ठध्छ

पाठ सार:

यहाँ पर मियाँ नज़ीर की चार नज़्में दी गई हैं। मियाँ नज़ीर राह चलते नज़्में कहने के लिए मशहूर थे। वे आते-जाते हमेशा नज़्मे कहते रहते थे। प्रस्तुत नज़्म 'आदमी नामा' में नज़ीर ने कुदरत के सबसे नायाब बिरादर, आदमी को आईना दिखाते हुए उसकी अच्छाइयों, सीमाओं और संभावनाओं से परिचित कराया है।कवि कहता है कि दुनिया में तरह तरह के आदमी होते हैं। दुनिया में चाहे कोई राजा हो या कोई आम इंसान हो सभी आदमी ही हैं। चाहे कोई धनी हो या निर्धन हो दोनों आदमी ही हैं। हर आदमी की अपनी अलग जीवन शैली होती है। यदि कोई मालदार या दौलतमंद भी है, वह भी आदमी ही है। जो कोई स्वादिष्ट भोजन खा रहा है, वो भी आदमी है और जो सूखे टुकड़ों पर पल रहा है वो भी आदमी है।

नमाज़ और कुरान को बनाने वाले भी आदमी ही हैं और उस मस्जिद में नमाज पढ़ने और पढ़वाने वाले भी आदमी ही हैं। मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला भी आदमी है और उसपर नज़र रखने वाला भी आदमी है। पाप करने वाला भी आदमी है और पुण्य करने वाला भी आदमी ही है। किसी की जान बचाने वाला भी आदमी ही है और किसी की जान लेने वाला भी आदमी ही है। किसी की इज़्ज़त को मिट्टी में मिलाने वाला भी आदमी है और मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला भी आदमी ही है और उसकी पुकार सुनकर दौड़कर आनेवाला भी आदमी है। राजा से लेकर मंत्री तक भी सभी आदमी ही हैं। कवि कहता है कि वह आदमी ही है जो किसी दूसरे आदमी के दिल को खुश करने वाला काम करता है। वह आदमी ही है जो संसार में संत की भूमिका निभाता है और वह भी आदमी ही होता है जो उस संत का भक्त होता है। कवि यह भी कहता है कि आदमी अच्छा भी होता है और कभी-कभी बुरा भी आदमी ही बन जाता है|

*-व्याख्या-

१-आदमी नामा व्याख्या:-

दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी
और मुफ़लिश-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी
ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी
निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी

व्याख्या -कवि कहता है कि दुनिया में तरह तरह के आदमी होते हैं। दुनिया में चाहे कोई राजा हो या कोई आम इंसान हो सभी आदमी ही हैं। अलग-अलग आदमी की अलग-अलग जिम्मेदारियाँ होती हैं। कवि कहता है कि चाहे कोई धनी हो या निर्धन हो दोनों आदमी ही हैं। हर आदमी की अपनी अलग जीवन शैली होती है। यदि कोई मालदार या दौलतमंद भी है, वह भी आदमी ही है। कवि के कहने का तात्पर्य है कि अलग-अलग आदमी अलग-अलग काम करते हैं, अलग-अलग व्यवहार करते हैं और अलग-अलग गुणों वाले होते हैं। कवि यह भी स्पष्ट करता है कि जो कोई स्वादिष्ट भोजन खा रहा है, वो भी आदमी है और जो सूखे टुकड़ों पर पल रहा है वो भी आदमी है

२-मसज़िद भी आदमी ने बनाई है यां मियाँ
बनते हैं आदमी ही इमाम और खुतबाख्वाँ
पढ़ते हैं आदमी ही कुरआन और नमाज यां
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ
जो उनको ताड़ता है सो है वो भी आदमी

व्याख्या -कवि आदमी को आईना दिखाते हुए कहता है कि जिसने मस्जिद बनाई है। नमाज़ और कुरान को बनाने वाले भी आदमी ही हैं और उस मस्जिद में नमाज पढ़ने और पढ़वाने वाले भी आदमी ही हैं। मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला भी आदमी है और उसपर नज़र रखने वाला भी आदमी है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि पाप करने वाला भी आदमी है और पुण्य करने वाला भी आदमी ही है।

३-यां आदमी पै जान को वारे है आदमी
और आदमी पै तेग को मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी

व्याख्या -कवि आदमी को आदमी की सच्चाई दिखाते हुए कहता है कि किसी की जान बचाने वाला भी आदमी ही है और किसी की जान लेने वाला भी आदमी ही है। किसी की इज्जत को मिट्टी में मिलाने

वाला भी आदमी है और मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला भी आदमी ही है और उसकी पुकार सुनकर दौड़कर आने वाला भी आदमी है।

कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आदमी किसी को मुसीबत में डालने वाला है तो उस मुसीबत में पड़े हुए आदमी को बचाने वाला भी कोई आदमी ही होता है|

4-अशराफ और कमीने से ले शाह ता वजीर
ये आदमी ही करते हैं सब कारे दिलपजीर
यां आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर
अच्छा भी आदमी ही कहाता है ए नजीर
और सबमें जो बुरा है सो है वो भी आदमी

व्याख्या -कवि आदमी को आदमी की सच्चाई का आईना दिखाते हुए कहता है कि शरीफ से लेकर कमीने तक सभी आदमी है और राजा से लेकर मंत्री तक भी सभी आदमी ही हैं। कवि कहता है कि वह आदमी ही है जो किसी दूसरे आदमी के दिल को खुश करने वाला काम करता है। वह आदमी ही है जो संसार में संत की भूमिका निभाता है और वह भी आदमी ही होता है जो उस संत का भक्त होता है। कवि यह भी कहता है कि आदमी अच्छा भी होता है और कभी -कभी बुरा भी आदमी ही बन जाता है।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:-

1 - यदि आदमी राजा है तो ________ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) रानी

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न द्व (यदि आदमी धनी है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० भिखारी

९द्ध० रानी

९ऋ० मंत्री

९ᛘ० प्रजा

प्रश्न ध (यदि आदमी स्वादिष्ट भोजन करने वाले है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० पानी पिने वाला

९द्ध० सूखे टुकड़े खाने वाला

९ऋ० भूखा रहने वाला

९ग० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न द्व (यदि आदमी नमाज़ और कुरान को बनाने वाले है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० नमाज़ और कुरान को नष्ट करने वाले

९द्य० नमाज़ और कुरान को पढ़ने व् पढ़ाने वाले

९ऋ० नमाज़ और कुरान को पढ़ाने वाले

९ग० नमाज़ और कुरान को पढ़ने वाल

प्रश्न छ (यदि आदमी मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० उन जूतों को बनाने वाला

९द्य० रानी मस्जिद की पहरेदारी करने वाला

९ऋ० मस्जिद के बाहर रखे जूतों पर नजर रखने वाला

९ग० उन जूतों को पहनने वाला

प्रश्न ट (यदि आदमी पाप करने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० परोपकार करने वाला

९द्य० पुण्य करने वाला

९ऋ० इज्ज़त करने वाला

९ग० पूजा करने वाला

प्रश्न ठ (यदि आदमी किसी की जान बचाने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० जान लेने वाला

९द्य० जान देने वाला

९ऋ० परोपकार करने वाला

९ग० इज्ज़त करने वाला

प्रश्न ड (यदि आदमी किसी की इज्ज़त को मिट्टी में मिलाने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब० जान लेने वाला

९द्य० जान देने वाला

९ऋ० परोपकार करने वाला

९ग० इज्ज़त करने वाला

प्रश्न ढ (यदि आदमी मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० उसकी पुकार सुनकर दौड़कर आने वाला

९द्य० उसकी पुकार अनसुना करने वाला

९ऋ० उसकी पुकार सुनकर न आने वाला

९म्० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ज्ञ० (यदि आदमी किसी को मुसीबत में डालने वाला है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० मुसीबत में पड़े हुए आदमी को अनदेखा करने वाला

९द्य० मुसीबत में पड़े हुए आदमी को न बचाने वाला

९ऋ० मुसीबत में पड़े हुए आदमी को बचाने वाला

९म्० इनमें से कोई नहीं

प्रश्न ज्ञज्ञ (यदि आदमी शरीफ है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० भिखारी

९द्य० कमीना

९ऋ० मंत्री

९म्० प्रजा

प्रश्न ज्ञद्द (यदि आदमी राजा है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० भिखारी

९द्य० रानी

९ऋ० मंत्री

९म्० प्रजा

प्रश्न ज्ञध (यदि आदमी संत है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० भिखारी

९द्य० भक्त

९ऋ० मंत्री

९म्० प्रजा

प्रश्न ज्ञद्ब (यदि आदमी अच्छा है तो))))))))) भी आदमी ही है।

९ब्० भिखारी

९द्य० भक्त

९ऋ० मंत्री

९ꟽ० बुरा

प्रश्न ज्ञछ (प्रस्तुत नज़्म का शीर्षक क्या हैरु

९ꝺ० आदमी नामा

९द्य० आदमी

९ऋ० आदमी नाम

९ꟽ० आदमी नज़्म

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न ज्ञ।'आदमी नामा' कविता का मूल कथ्य/प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'आदमी नामा' कविता का मूलकथ्य/प्रतिपाद्य है- आदमी को उसकी वास्तविकता का आइना दिखाना तथा विभिन्न प्रवृत्तियों और स्वभाव वाले व्यक्तियों के कार्य व्यवहार को अभिव्यक्त करना। आदमी ही है जो अच्छा या बुरा काम करता है और अपने कर्म के अनुसार पीर अथवा शैतान का दर्जा प्राप्त करता है।

प्रश्न द्व।आदमी किन स्थितियों में पीर बन जाता हैरु

उत्तर-जब आदमी अच्छा कार्य करता है, दूसरों पर अपनी जान न्योछावर करता है, दूसरों को संकट में फँसा देखकर उसकी मदद के लिए दौड़ा जाता है तथा धर्मगुरु बनकर दूसरों को मानवता की सेवा करने का उपदेश देता है तो इन परिस्थितियों में आदमी पीर बन जाता है।

प्रश्न ध।'आदमी नामा' कविता व्यक्ति के स्वभाव के बारे में क्या अभिव्यक्त करती हैरु

उत्तर-'आदमी नामा' कविता किसी व्यक्ति के अच्छे स्वभाव का उल्लेख करती है, उसके कर्म और विशेषता को अभिव्यक्ति करती है तो दूसरों की जान लेने, बेइज्जती करने तथा जूतियाँ चुराने जैसे निकृष्ट कार्यों को भी अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार यह कविता व्यक्ति के स्वभाव की विविधता का ज्ञान कराती है।

प्रश्न द्ब।'सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी' के माध्यम से नज्मकार ने क्या कहना चाहा हैरु

उत्तर-सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी के माध्यम से नज्मकार ने आदमी के मानवीय गुणोंश जैसे- दयालुता, सहृदयता, संवेदनशीलता और उपकारी प्रवृत्ति का उल्लेख करना है। इन मानवीय गुणों के कारण व्यक्ति किसी की याचना भरी पुकार को अनसुना नहीं कर पाता है और मदद के लिए भाग जाता है।

प्रश्न छ।मसज़िद का उल्लेख करके नज्मकार ने किस पर व्यंग्य किया हैरु इसका उद्देश्य क्या हैरु

उत्तर-मसजिद का उल्लेख करके नज्मकार ने उस आदमी पर व्यंग्य किया है जो मसजिद में नमाज और कुरान पढ़ने आए लोगों की जूतियाँ चुराता है। ऐसे आदमी पर व्यंग्य करने का उद्देश्य यह बताना है कि आदमी अलग-अलग स्वभाव वाले होते हैं जो अच्छे या बुरे कर्म करते हैं।

*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न झ।नज़ीर अकबराबादी ने आदमी के चरित्र की विविधता को किस तरह उभारा हैरु'आदमी नामा' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि नज़ीर अकबराबादी ने 'आदमी नामा' कविता में आदमी के चरित्र को उसके स्वभाव और कार्य के आधार पर उभारा है। उनका कहना है कि दुनिया में लोगों पर शासन करने वाला आदमी है, तो गरीब, दीन-दुखी और दरिद्र भी आदमी है। धनी और मालदार लोग आदमी हैं तो कमजोर व्यक्ति भी आदमी है। स्वादिष्ट पदार्थ खाने वाला आदमी है तो दूसरों के सूखे टुकड़े चबाने वाला भी आदमी है। इसी प्रकार दूसरों पर अपनी जान न्योछावर करनेवाला आदमी है तो किसी पर तलवार उठाने वाला भी आदमी है। एक आदमी अपने कार्यों से पीर बन जाता है तो दूसरा शैतान बन जाता है। इस तरह कवि ने आदमी के चरित्र की विविधता को उभारा है

प्रश्न द्द।नज्मकार ने मसजिद का उल्लेख किस संदर्भ में किया है और क्योंरु

उत्तर-नज्मकार नज़ीर ने मसजिद का उल्लेख स्थान एवं आदमी की विविधता बताने के संदर्भ में किया है। मसजिद वह पवित्र स्थान है जहाँ व्यक्ति कुरान और नमाज़ पढ़ता है परंतु उसके दरवाजे पर चोरी भी की जाती है। इसके अलावा उसी मस्जिद को आदमी ने बनवाई, उसके अंदर इमाम कुरान और नमाज़ पढ़ाता है, जो अलग-अलग कोटि के आदमी है। वहीं जूतियाँ चुराने वाला अपना काम करने का प्रयास कर रहा है तो उनका रखवाला भी आदमी ही है। इस पवित्र स्थान पर भी मनुष्य अपने-अपने स्वभाव के अनुसार कार्य कर रहे हैं। उनकी प्रवृत्ति उनमें भिन्नता प्रकट कर रही है

प्रश्न ध।'आदमी नामा' पाठ के आधार पर आदमी के उस रूप का वर्णन कीजिए जिसने आपको सर्वाधिक प्रभावित कियारु

उत्तर-'आदमी नामा' कविता में आदमी के जिस रूप ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया वह है उसका उच्च मानवीय वाला रूप। ऐसा आदमी ऊँच-नीच का भेद-भाव किए बिना मनुष्य पर जान न्योछावर करता है। वह सबको समान मानकर उनसे प्रेम करता है। वह मनुष्य की भलाई के लिए सदा परोपकार करता है और किसी संकटग्रस्त आदमी की पुकार सुनते ही उसकी मदद करने के लिए चल पड़ता है और उसे संकटमुक्त करने का हर संभव प्रयास करता है।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

१-पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के किन-किन रूपों का बखान करती हैरु क्रम से लिखिए।

चारों छंदों में कवि ने आदमी के सकारामक और नकारात्मक रूपों को परस्पर किन-किन रूपों में रखा हैरु अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

'आदमी नामा' शीर्षक कविता ने इन अंशों को पढ़कर आपके मन में मनुष्य के प्रति क्या धारणा बनती हैरु
इस कविता का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों रु
आदमी की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-ङ्ग। पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के विभिन्न रूपों, जैसे- बादशाह गरीब, भिखारी, मालदार एवं अमीर, कमजोर, स्वादिष्ट और दुर्लभ भोज्य पदार्थ खाने वाला तथा दूसरे छंद में। सूखी रोटी के टुकड़े चबाने वाले व्यक्ति का वर्णन हुआ है

द्द। कवि ने अपने चारों छंदों में आदमी के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों को परस्पर अनेक रूपों में रखा हैश्च जैसे-
आदमी ही बादशाह है तो उसकी प्रजा भी आदमी ही है।
कुरान पढ़ाने वाला आदमी है तो उसे सुनने और समझने वाला भी आदमी ही है।
जतियाँ चुराने वाला आदमी है तो उन जूतियों को रक्षक भी आदमी ही है।
आदमी से प्यार करने वाला भी आदमी है तो उस पर तलवार उठाने वाला भी आदमी ही है।
अच्छे कार्य करने वाले भी आदमी हैं, तो बुरे काम करने वाले भी आदमी ही हैं

ध्र। "आदमी नामा' शीर्षक कविता के अंशों को पढ़कर हमारे मन में मनुष्य के प्रति यह धारणा बनती है कि, आदमी ही है जो अच्छा और बुरा दोनों कार्य करता है। अच्छे कार्य करने और दूसरों की भलाई करने के कारण वह पीर और देवता के समान बन जाती है, परंतु मनुष्य जब दूसरों को सताने का काम करता है तो वह निंदा का पात्र बन जाता है।

द्ब। इस कविता में संकलित चारों ही नज्में अच्छी हैं, परंतु तीसरी नज्म मुझे विशेष रूप से अच्छी लगी क्योंकि आदमी ही आदमी से प्रेम करता है, अपनी जान न्योछावर करता है। वह भी आदमी ही है जो संकट में फँसे व्यक्ति की मदद करने के लिए भागा-भागा जाता है

5. इस संसार में अनेक प्रवृत्तियों वाले आदमी हैं। इनमें मसजिद बनाने वाले, कुरान पढ़ने लोग है तो उसी मसजिद में कुरान पढ़ाने वालों के अलावा जूतियाँ चुराने वाले लोग भी है। एक ओर दूसरों पर जान न्योछावर करने वाले लोग हैं। तो ऐसे लोग भी हैं जो दूसरों पर तलवार उठाते हैं। आदमी की बेइज्जती करने वाले लोग हैं तो आदमी की मदद करने वाले लोगों की भी कमी नहीं है|

संचयन-पाठ-3-कल्लू कुम्हार की उनाकोटि

लेखक -के .विक्रम सिंह

जन्म – झढधड

पाठ सार:

लेखक ध्वनि का एक अनोखा गुण बताते हुए कहता है कि वह एक क्षण में ही आपको किसी दूसरे ही समय-संदर्भ में पहुँचा सकती है। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि लेखक यहाँ हमें यह समझाना चाहता है कि जब हम कभी कोई काम कर रहे होते है और अचानक ही कोई तेज आवाज हो तो हम हड़बड़ा जाते है और कुछ समय के लिए कभी-कभी तो भूल भी जाते हैं कि हम क्या काम कर रहे थे। लेखक अपने बारे में कहता है कि वह उन लोगों में से नहीं है जो सुबह चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक सुबह की सैर के लिए तैयार हो जाते हैं और फिर लोधी गार्डन पहुँच कर वहाँ बने मकबरों को निहारते रहते है और अपनी मेम साहबों के साथ में लंबी सैर पर निकल जाते हैं। लेखक तो आमतौर पर सूर्योदय के साथ उठता है और फिर अपनी चाय खुद बनाता है और फिर चाय और अखबार लेकर लंबी आलस से भरी हुई सुबह का मजा लेता है। लेखक कहता है कि अकसर अखबार की खबरों पर उसका कोई ध्यान नहीं रहता। उसका अखबार पढ़ना तो सिर्फ दिमाग को किसी कटी पतंग की तरह ऐसे ही हवा में तैरने देने का एक बहाना है। लेखक किसी एक दिन की सुबह का वर्णन करता हुआ कहता है कि उस दिन अभी लेखक की वह शांतिपूर्ण दिनचर्या शुरू ही हुई थी कि उसमें एक बाधा पड़ गई। उस सुबह लेखक एक ऐसी कान को फाड़ कर रख देने वाली तेज आवाज के कारण जागा, यह आवाज तोप दगने और बम फटने जैसी लग रही थी, उस आवाज को सुनकर लेखक को लगा कि गोया जार्ज डब्लू .बुश और सद्दाम हुसैन की मेहरबानी से तीसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत हो चुकी हो। लेखक ने खुदा का शुक्रियादा किया क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं थी। दरअसल यह तो सिर्फ स्वर्ग में चल रहा देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिजलियों की चमक और बादलों की गरज के रूप में देखने को मिल रही थी। लेखक ने खिड़की के बाहर झाँका। लेखक ने देखा कि आकाश बादलों से भरा था जिसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सेनापतियों द्वारा छोड़ दिए गए सैनिक आतंक में एक-दूसरे से टकरा रहे हो। इस तांडव के गर्जन-तर्जन ने लेखक को तीन साल पहले त्रिपुरा में उनाकोटी की एक शाम की याद दिला दी थी। लेखक कहता है कि वह तीन साल पहले दिसंबर झढढढ में ‘ऑन द रोड ’शीर्षक वाली एक टीवी शृंखला बनाने के सिलसिले में मैं त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया था। त्रिपुरा भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक है। चैंतीस प्रतिशत से ज्यादा की इसकी जनसंख्या वृद्धि दर दूसरे राज्यों की अपेक्षा भी खासी ऊँची है। लेखक इसकी सीमा के बारे में बताते हुए कहता है कि यह तीन तरफ से तो बांग्लादेश से घिरा हुआ है और बाकी बचा शेष भाग भारत के साथ ऐसे स्थान से जुड़ा हुआ है जहाँ पर हर किसी का पहुँचना आसान नहीं है। बांग्लादेश से लोगों का बिना अनुमति के त्रिपुरा में आना और यहीं बस जाना जबर्दस्त है और इसे यहाँ सामाजिक रूप से स्वीकार भी किया गया है। यहाँ की असाधारण जनसंख्या वृद्धि का मुख्य

कारण लेखक इसी को मानता है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का त्रिपुरा प्रवास यहाँ होता ही है। लेखक कहता है कि पहले के तीन दिनों में उसने अगरतला और उसके आस-पास ही शूटिंग की, जहाँ लेखक शूटिंग कर रहा था वह स्थान कभी मंदिरों और महलों के शहर के रूप में जाना जाता था। त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोगों के आने और यहीं बस जाने से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं लेकिन इसके कारण यह राज्य विभिन्न धर्मों वाले समाज का उदाहरण भी बना है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियों और विश्व के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिध्त्वि मौजूद है। लेखक कहता है कि अगरतला में शूटिंग के बाद उन्होंने त्रिपुरा का राष्ट्रीय राजमार्ग-ह्ब्ब पकड़ा और टीलियामुरा कस्बे में जा पहुँचे। यहाँ लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई जो वहाँ के एक बहुत ही प्रसिद्ध लोकगायक थे और उन्हें झढढट में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार भी दिए गए हैं। जिला परिषद ने लेखक की शूटिंग यूनिट के लिए एक भोज का प्रबंध किया था। त्रिपुरा के लोग अभी दिखावटी दुनिया से दूर थे, वे अपने रीती-रिवाजों को ही मानते आ रहे थे। भोजन करने के बाद लेखक ने हेमंत कुमार जमातिया से एक गीत सुनाने की प्रार्थना की और उन्होंने अपनी धरती पर बहती शक्तिशाली नदियों, ताजगी भरी हवाओं और शांति से भरा एक गीत गाया। टीलियामुरा शहर के वार्ड नं .ध

में लेखक की मुलाकात एक और गायक से हुई। वह गायक थी मंजु ऋषिदास। ऋषिदास मोचियों के एक समुदाय का नाम है। लेकिन जूते बनाने के अलावा इस समुदाय के कुछ लोग थाप वाले वाद्यों जैसे तबला और ढोल के निर्माण और उनकी मरम्मत के काम में भी बहुत ज्यादा अच्छे थे। मंजु ऋषिदास के बारे में लेखक बताते हैं कि मंजु ऋषिदास एक बहुत ही आकर्षक महिला थीं और वह एक रेडियो कलाकार भी थी। रेडियो कलाकार होने के अलावा वे नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती थीं। लेखक कहता है कि मंजु ऋषिदास भले ही पढ़ी-लिखी नहीं थीं। लेकिन वे अपने वार्ड की सबसे बड़ी आवश्यकता यानी साफ पीने के पानी के बारे में उन्हें पूरी जानकारी थी। त्रिपुरा के उस मुख्य भाग में प्रवेश करने से पहले जहाँ पर हिंसा हो रही थी, टीलियामुरा वहाँ की आखिरी जगह थी। मुख्य सचिव और आई.जी., सी.आर.पी.एफ .से लेखक ने निवेदन किया था कि वे लेखक और लेखक की पूरी यूनिट को घेरेबंदी में चलने वाले यात्रियों के दलों के आगे-आगे चलने दें। इसके लिए मुख्य सचिव और आई.जी., सी.आर.पी.एफ .पहले तो तैयार नहीं हुए परन्तु फिर थोड़ी ना-नुकुर करने के बाद वे इसके लिए तैयार हो गए लेकिन उन्होंने लेखक के सामने एक शर्त रखी। वह शर्त थी कि लेखक और लेखक के कैमरामैन को सी.आर.पी.एफ .की हथियारों से भरी गाड़ी में चलना होगा और यह काम लेखक और लेखक के कैमरामैन को अपने जोखिम पर करना होगा। लेखक मनु कस्बे के बारे में बताता हुआ कहता है कि त्रिपुरा की प्रमुख नदियों में से एक मनु नदी है। जिसके किनारे स्थित मनु एक छोटा सा कस्बा है। जिस वक्त लेखक और लेखक की यूनिट मनु नदी के पार जाने वाले पुल पर पहुँची, तब शाम हो रही थी और लेखक उस शाम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि उस शाम को सूर्य की सुनहरी किरणें को मनु नदी के जल पर बिखरा हुआ देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सूर्य मनु नदी के पानी में अपना सोना उँड़ेल रहा था। लेखक कहता है कि अब वे सब उत्तरी त्रिपुरा जिले में आ गए थे। यहाँ की लोकप्रिय घरेलू गतिविधियों में से एक गति-विधि अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार करना है। अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार करने के बाद अगरबत्तियाँ बनाने के लिए इन्हें कर्नाटक और

गुजरात भेजा जाता है। उत्तर त्रिपुरा पहुँचाने के बाद लेखक ने वहाँ के से मुलाकात की, वह जिलाधिकारी केरल से आया हुआ एक नौजवान निकला। उसके बारे में लेखक बताता है कि वह जिलाधिकारी बहुत तेज, सभी से अच्छी तरह मिलने वाला और उत्साह से भरा हुआ व्यक्ति था। जब लेखक और वह जिलाधिकारी चाय पी रहे थे उस दौरान उस जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि टी.पी.एस) .टरू पोटेटो सीड्स (की खेती को त्रिपुरा में, खासकर पर उत्तरी जिले में किस तरह से सफलता मिली है। त्रिपुरा से टी.पी.एस .को अब न सिर्फ असम, मिज़ोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश को ही भेजा जाता है, बल्कि अब तो विदेशो में जैसे बांग्लादेश, मलेशिया और विएतनाम को भी भेजा जा रहा है। जिलाधिकारी ने अचानक लेखक से पूछा कि क्या वह उनाकोटी में शूटिंग करना पसंद करेंगाु जिलाधिकारी ने लेखक को उनाकोटी के बारे में आगे बताते हुए कहा कि उनाकोटी भारत का सबसे बड़ा तो नहीं परन्तु सबसे बड़े भगवान् शिव के तीर्थों में से एक जरूर है। जिलाधिकारी कहता है कि यह जगह जंगल में काफी भीतर है हालाँकि जहाँ लेखक और उसकी यूनिट अभी थी वहाँ से इसकी दूरी सिर्फ नौ किलोमीटर ही थी। अब तक जिलाधिकारी ने उनाकोटी के बारे में इतना सब कुछ बता दिया था कि लेखक के पर इस जगह का रंग पूरी तरह से चढ़ चुका था। टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा कर लेने के बाद तो लेखक अपने आप को कुछ ज्यादा ही साहसी महसूस करने लगा था। क्योंकि टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा बहुत खतरनाक थी और लेखक उसे पार कर चूका था तो उसे लगता है कि वह टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा को कर सकता है तो उनाकोटी पहुँचाने के लिए जंगल पार करना कौन सी बड़ी बात है। लेखक हमें उनाकोटी के बारे में बताता हुआ कहता है कि उनाकोटी का मतलब है एक कोटि, यानी एक करोड़ से एक कम। लेखक कहता है कि एक काल्पनिक कथा के अनुसार उनाकोटी में शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। यहाँ पहाड़ों को अंदर से काटकर विशाल आधार-मूर्तियाँ बनाई गई हैं। एक बहुत विशाल चट्टान ऋषि भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के उतरने की पौराणिक कथा को चित्रित करती है। गंगा के पृथ्वी पर उतरने के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसी वजह से भगवान् शिव को इसके लिए तैयार किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और इसके बाद इसे धीरे-धीरे पृथ्वी पर बहने दें। लेखक कहता है कि यहाँ पर भगवान शिव का चेहरा एक पूरी चट्टान पर बना हुआ है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हुई हैं। भारत में शिव की यह सबसे बड़ी आधार-मूर्ति है। लेखक कहता है कि यहाँ पूरे साल बहने वाला एक झरना पहाड़ों से उतरता है जिसे गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है। यह पूरा इलाका ही प्रत्येक शब्द के अनुसार ही देवियों-देवताओं की मूर्तियों से भरा पड़ा है। यहाँ लेखक के कहने का अर्थ है कि यहाँ हर कदम पर आपको किसी न किसी देवी-देवता की मूर्ति जरूर मिल जाएगी। लेखक कहता है कि उनाकोटी में बनी इन आधार-मूर्तियों का निर्माण किसने किया है यह अभी तक पता नहीं किया जा सका हैं। स्थानीय आदिवासियों का मानना है कि इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह माता पार्वती का भक्त था और भगवान शिव-माता पार्वती के साथ उनके निवास स्थान कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। परन्तु भगवान शिव उसे अपने साथ नहीं लेना चाहते थे। पार्वती के जोर देने पर

शिव कल्लू को कैलाश ले चलने को तैयार तो हो गए लेकिन इसके लिए उन्होंने कल्लू के सामने एक शर्त रखी और वह शर्त थी कि उसे एक रात में शिव की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू अपनी धुन का पक्का व्यक्ति था इसलिए वह इस काम में जुट गया।

*-अति लघु प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न 1.'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है?
उत्तर-उनाकोटी का अर्थ है-एक कोटी अर्थात् एक करोड़ से एक कम। इस स्थान पर भगवान शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। इतनी अधिक मूर्तियाँ एक ही स्थान पर होने के कारण यह स्थाने प्रसिद्ध है|

प्रश्न 2.पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-उनाकोटी में पहाड़ों को अंदर से काटकर विशाल आधार मूर्तियाँ बनाई गई हैं। अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धंसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसके लिए शिव को राजी किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और बाद में धीरे-धीरे बहने दें। शिव का चेहरा एक समूची चट्टान पर बना हुआ है। उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली है। यहाँ पूरे साल बहने वाला जल प्रपात है, जिसे गंगा जल की तरह ही पवित्र माना जाता है।

प्रश्न 3.कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड गया?
उत्तर-स्थानीय आदिवासियों के अनुसार कल्लू कुम्हार ने ही उनाकोटी की शिव मूर्तियों का निर्माण किया है। वह शिव का भक्त था। वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। भगवान शिव ने शर्त रखी कि वह एक रात में एक करोड़ शिव मूर्तियों का निर्माण करे। सुबह होने पर एक मूर्ति कम निकली। इस प्रकार शिव ने उसे वहीं छोड़ दिया। इसी मान्यता के कारण कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया|

प्रश्न 4.मेरी रीढ़ में एक झुरझरी-सी दौड़ गई'-लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?
उत्तर-लेखक राजमार्ग संख्या 44 पर टीलियामुरा से 83 किलोमीटर आगे मनु नामक स्थान पर शूटिंग के लिए जा रहा था। इ यात्रा में वह सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में चल रहा था। लेखक और उसका कैमरा मैन हथियार बंद गाड़ी में चल रहे। थे। लेखक अपने काम में इतना व्यस्त था कि उसके मन में डर के लिए जगह न थी। तभी एक सुरक्षा कर्मी ने निचली पहाड़ियों पर रखे दो पत्थरों की ओर ध्यान आकृष्ट करके कहा कि दो दिन पहले उनका एक जवान विद्रोहियों द्वारा मार डाला गया था। यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई|

प्रश्न 5.त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना?
उत्तर-त्रिपुरा में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग बाहरी क्षेत्रों से आकर बस गए हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक धर्मों का समावेश हो गया है। तब से यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया है।

प्रश्न 6.टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तर-टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय जिन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ उनमें एक हैं- हेमंत कुमार जमातिया, जो त्रिपुरा के प्रसिद्ध लोक गायक हैं। जमातिया 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत किए जा चुके हैं। अपनी युवावस्था में वे पीपुल्स लिबरेशन आर्गनाइजेशन के कार्यकर्ता थे, पर अब वे चुनाव लड़ने के बाद जिला परिषद के सदस्य बन गए हैं।लेखक की मुलाकात दूसरी प्रमुख हस्ती मंजु ऋषिदास से हुई, जो आकर्षक महिला थी। वे रेडियो कलाकार होने के साथसाथ नगर पंचायत की सदस्या भी थीं। लेखक ने उनके गाए दो गानों की शूटिंग की। गीत के तुरंत बाद मंजु ने एक कुशल गृहिणी के रूप में चाय बनाकर पिलाई।

प्रश्न 7.कैलासशहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी?
उत्तर-कैलासशहर के जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि यहाँ बुआई के लिए पारंपरिक आलू के बीजों के बजाय टी.पी.एस. नामक अलग किस्म के आलू के बीज का प्रयोग किया जाता है। इस बीज से कम मात्रा में ज्यादा पैदावार ली जा सकती है। यहाँ के निवासी इस तकनीक से काफी लाभ कमाते हैं|

प्रश्न 8.त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए?
उत्तर-त्रिपुरा के लघु उद्योगों में मुख्यतः बाँस की पतली-पतली सीकें तैयार की जाती हैं। इनका प्रयोग अगरबत्तियाँ बनाने में किया जाता है। इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है ताकि अगरबत्तियाँ तैयार की जा सकें। त्रिपुरा में बाँस बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। इस बाँस से टोकरियाँ सजावटी वस्तुएँ आदि तैयार की जाती हैं|

*-प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.ध्वनि किस तरह व्यक्ति को किसी दूसरे समय-संदर्भ में पहुँचा देती है? पाठ के आधार पर लिखिए।
उत्तर-लेखक ने एक टीवी सीरियल 'ऑन द रोड' की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा गया था। वहाँ वह उनाकोटी में शूटिंग कर रहा था कि अचानक बादल घिर आए। लेखक जब तक अपना सामान समेटता तब तक बादल जोर से गर्जन-तर्जन करने लगे और तांडव शुरू हो गया। तीन साल बाद लेखक ने जब ऐसा ही गर्जन-तर्जन दिल्ली में देखा सुना तो उसे उनाकोरी की याद आ गई। इस तरह ध्वनि ने उसे दूसरे समय संदर्भ में पहुँचा दिया।

प्रश्न 2.लेखक की दिनचर्या कुछ लोगों से किस तरह भिन्न है? उनाकोटी के आधार पर लिखिए।
उत्तर-लेखक सूर्योदय के समय उठता है और अपनी चाय बनाता है। फिर वह चाय और अखबार के साथ

अलसाई सुबह का आनंद लेता है जबकि कुछ लोग चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक तैयार होकर लोदी गार्डन पहुँच जाते हैं और मेम साहबों के साथ लंबी सैर के साथ निकल जाते हैं|

प्रश्न 3.लेखक ने अपनी शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़ने की बात लिखी है। ऐसा कब और कैसे हुआ?
उत्तर-लेखक की नींद एक दिन तब खुली जब उसने तोप दगने और बम फटने जैसी कानफोड़ आवाज सुनी। वास्तव में यह स्वर्ग में चलने वाला देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिजलियों की चमक और बादलों की गरज में सुनने को मिली। इस तरह लेखक की शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़ गई।

प्रश्न 4.लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा कब की? इस यात्रा का उद्देश्य क्या था?
उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा दिसंबर 1999 में की। वह 'आन दि रोड' शीर्षक से बनने वाले टीवी धारावाहिक की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया। इस यात्रा का उद्देश्य था त्रिपुरा की पूरी यात्रा कराने वाले राजमार्ग 44 से यात्रा करना तथा त्रिपुरा की विकास संबंधी गतिविधियों की जानकारी देना।

प्रश्न 5.त्रिपुरा में आदिवासियों के मुख्य असंतोष की वजह पर प्रकाश डालिए।
उत्तर-त्रिपुरा तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा है। शेष भारत के साथ इसका दुर्गम जुड़ाव उत्तर-पूर्वी सीमा से सटे मिजोरम और असम के साथ बनता है। यहाँ बांग्लादेश के लोगों की जबरदस्त आवक है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का प्रवास यहाँ होता है। इस भारी आवक ने जनसंख्या संतुलन को स्थानीय आदिवासियों के खिलाफ ला खड़ा किया। यही त्रिपुरा में आदिवासियों के असंतोष का मुख्य कारण है।

प्रश्न 6.लेखक ने त्रिपुरा में बौद्ध धर्म की क्या स्थिति देखी? कुल्लू कुम्हार की उनकोटी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा के बाहरी हिस्से पैचारथल में एक सुंदर बौद्ध-मंदिर देखा। पता चला कि त्रिपुरा के उन्नीस कबीलों में से दो-चकमा और मुध महायानी बौद्ध हैं, जो त्रिपुरा में म्यांमार से चटगाँव के रास्ते आए थे। इस मंदिर की मुख्य बुद्ध प्रतिमा भी 1930 के दशक में रंगून से लाई गई थी।

प्रश्न 7.लेखक ने त्रिपुरा के लोक संगीत का अनुभव कब और कैसे किया?
उत्तरत्रिपुरा की राजधानी अगरतला में लेखक की मुलाकात यहाँ के प्रसिद्ध लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया से हुई, जो कोकबारोक बोली में गाते हैं। लेखक ने उनसे एक गीत सुनाने का अनुरोध किया। उन्होंने धरती पर बहती नदियों और ताजगी और शांति का गीत सुनाया। इसके अलावा उन्होंने मंजु ऋषिदास से दो गीत सुने ही नहीं बल्कि उनकी शूटिंग भी की।

प्रश्न 8.त्रिपुरा में उनाकोटी की प्रसिद्धि का कारण क्या है?
उत्तर-त्रिपुरा स्थिति उनाकोटी दस हजार वर्ग किलोमीटर से कुछ ज्यादा इलाके में फैला हुआ धार्मिक स्थल

है। यह भारत का सबसे बड़ा तो नहीं, पर सबसे बड़े शैव स्थलों में एक है। संसार के इस हिस्से में स्थानीय आदिवासी धर्म फलत-फूलते रहे हैं।

प्रश्न 9.उनाकोटी में लेखक को शूटिंग का इंतज़ार क्यों करना पड़ा?
उत्तर-जिलाधिकारी द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के साथ लेखक अपनी टीम सहित नौ बजे तक उनाकोटी पहुँच गया, परंतु यह स्थान खास ऊँचे पहाड़ों से घिरा है, इससे यहाँ सूरज की रोशनी दस बजे तक ही पहुँच पाती है। रोशनी के अभाव में शूटिंग करना संभव न था, इसलिए लेखक को शूटिंग के लिए इंतजार करना पड़ा|

*-दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखक को अपनी यात्रा में शूटिंग के लिए क्या-क्या खतरे उठाने पड़े? इस तरह की परिस्थितियों का विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? ऐसी परिस्थितियों को रोकने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।
उत्तर-लेखक को एक धारावाहिक की शूटिंग के लिए त्रिपुरा जाना पड़ा। यहाँ बाहरी लोगों की भारी आवक के कारण स्थानीय लोगों में गहरा असंतोष है। इससे यह क्षेत्र हिंसा की चपेट में आ जाता है। इस हिंसाग्रस्त भाग में 83 किलोमीटर लंबी यात्रा में लेखक को सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में काफिले के रूप में चलना पड़ा। मौत का भय उसे आशंकित बनाए हुए था। इस तरह की परिस्थितियों के कारण पर्यटन उद्योग बुरी तरह चरमरा जाता है| इसके अलावा अन्य उद्योग धंधों का विकास भी नहीं हो पाता है जिसका दुष्प्रभाव प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों को रोकने के लिए सरकार को असंतुष्ट लोगों के साथ मिलकर बातचीत करनी चाहिए, उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनना चाहिए तथा उनके निवारण हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

प्रश्न 2.-'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के आधार पर गंगावतरण की कथा का उल्लेख कीजिए और बताइए कि ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर-त्रिपुरा राज्य में स्थित उनाकोटी नामक स्थान पर गंगावतरण की संपूर्ण कथा को पत्थरों पर उकेरा गया है। यहाँ एक विशाल चट्टान पर भागीरथ को तपस्या करते दर्शाया गया है तो दूसरी चट्टान पर शिव के चेहरे को बनाया गया है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। यह साल भर बहने वाला जल प्रपात है जिसका जल गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है।ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि-हम वहाँ गंदगी न फैलाएँ।अपनी ज़रूरी वस्तुएँ स्वयं ले जाएँ और लेकर वापस आएँ।पेड़ों, चट्टानों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं पर अपना नाम लिखने का प्रयास न करें तथा न कोई प्रतीक चिह्न बनाएँ। ऐसे स्थानों की पवित्रता का ध्यान रखें तथा पेड़-पौधों एवं अन्य वस्तुओं को नुकसान न पहुँचाएँ।

प्रश्न 3.लेखक को ऐसा क्यों लगा कि त्रिपुरा स्वच्छता के नाम पर उत्तर भारतीय गाँवों से अलग है? इससे आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर-त्रिपुरा में लेखक की मुलाकात गायिका मंजु ऋषिदास से हुई। वे रेडियो कलाकार होने के साथ नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थी। वे अपने क्षेत्र की सबसे बड़ी आवश्यकता (स्वच्छ पेयजल) की पूरी जानकारी रखती थे। वे नगर पंचायत को इस बात के लिए राजी कर चुकी थीं कि उनके वार्ड में नल का पानी पहुँचाया जाए और गलियों में ईंटें बिछाई जाएँ। मंजु ऋषिदास का संबंध मोचियों के समुदाय से था।इस समुदाय की बस्तियों को प्रायः मलिन बस्ती के नाम से जाना जाता है, पर मंजु ने यहाँ शारीरिक और व्यक्तिगत स्वच्छता अभियान चलाया जबकि उत्तर भारतीय गाँवों में स्वच्छता के नाम पर एक नए किस्म की अछूत प्रथा अब भी चलन में दिखती है। इससे हमें भी अपने आसपास साफ़-सफ़ाई रखने की प्रेरणा मिलती है|

व्याकरण-संस्कृत के उपसर्गइन उपसर्गों को तत्सम उपसर्ग भी कहा जाता है। ये प्रायः तत्सम शब्दों के - साथ प्रयुक्त होते हैं।संस्कृत केउपसर्ग और उनसे बने शब्द ।

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अति	बहुत अधिक, परे, अधिक	अतिवृष्टि, अतिशय, अतिक्रमण, अत्याचार, अतिरिक्त, अत्यंत
अधि	ऊँचा श्रेष्ठ	अधिवक्ता, अधिनायक, अधिगम, अधिकार, अधिकृत, अधिपति
अनु	पीछे, बाद में, गौण	अनुगमन, अनुसार, अनुशासन, अनुरोध, अनुभव, अनुकूल
अप	अनुचित, बुरा, दूर	अपमान, अपयश, अपशब्द, अपहरण, अपकीर्ति, अपव्यय
अभि	सामने, पास, चारों ओर	अभिमान, अभिशाप, अभिनय, अभिनव, अभिप्राय, अभियोग
		विशेषता बताने के लिए
अव	बुरा, हीन, उप	अवगुण, अवनति, अवसान, अवमूल्यन, अवशेष, अवरोध
आ	तक, समेत, पर्यंत	आजन्म, आजीवन, आमरण, आगमन, आवास, आरक्षण
उत्	श्रेष्ठ, ऊपर	उन्नति, उन्नयन, उत्थान, उद्घाटन, उन्नायक, उच्छ्वास
उप	निकट, समान, गौण	उपवन, उपसर्ग, उपवास, उपहास, उपग्रह, उपयोग
दुस्	कठिन, बुरा	दुस्साहस दुष्कर्म, दुष्कर, दुस्साध्य
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्बल, दुर्दिन, दुर्जन, दुर्योग, दुर्विजय, दुर्भाग्य दुर्लभ
निस्	निर्, रहित, नहीं	निष्काम, निश्चल, निष्पाप, निर्मम, निरपराध, निराहार
नि	समूह, आदेश, समीपता	नियम, निबंध, निकेतन, निषेध
परा	उलटे, पीछे, विपरीत	पराजय, पराधीन, पराश्रयी, पराक्रम, पराकाष्ठा, पराभव
परि	चारों ओर, पूर्णतः, क्रम	परिधि, परिक्रम, पर्यावरण, परिवार, परिश्रम, परित्याग
प्र	आगे, सामने, उत्तम, सम्मान	प्रमाण, प्रचार, प्रहार, प्रहर, प्रसाद, प्रकांड, प्रवेश
प्रति	हर एक, विरुद्ध	प्रतिशत, प्रत्येक, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रत्याशा
वि	विशेष, विभिन्नता, अभाव	वियोग, विराम, विमल, विकार, विहार, विज्ञान, विशिष्ट, विशुद्ध
सम्	संयोग, अच्छा, सहित	संन्यास, संपर्क, संबंध, संचय, संयोग संचार, संग्राम सम्मुख
सु	अच्छी तरह, सुंदर	सुफल, सुकर्म, सुदिन, सुपुत्र, स्वागत, सुपात्र, सुशिक्षित, सुलभ

(ख)हिंदी के उपसर्ग-इन उपसर्गों का दूसरा नाम तद्भव उपसर्ग भी है। इनका प्रयोग हिंदी के शब्दों के साथ किया जाता है।

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अ	अभाव, रहित, हीन	अथाह, अछूत, अजान, असार, अनाथ
अन	निषेध, अभाव	अनजान, अनपढ़, अनभल, अनचाहा, अनमना, अनहोनी, अनगढ़
अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधखिला, अधकपारी, अधकचरा
औ	हीन, बुरा	औघट, औजार, औगुन
उन	एक कम	उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
क/कु	बुरा	कपूत, कुलटा, कुकर्म, कुफल
चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौपाटी, चौतरफा, चौमुखी
दु	रहित, दो	दुबला, दुगुना, दुविधा, दुकूल
नि	रहित	निकम्मा, निडर, निहत्था, निदान
बिन	बिना	बिनबात, बिनखाए, बिनव्याहा, बिनकहे, बिनचाहे, बिन बुलाए

(घ)आगत या विदेशी उपसर्गइन उपसर्गों का प्रयोग विदेशी भाषा के शब्दों में होता है। उर्दू-, अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी भाषा के उपसर्ग इसी कोटि में आते है|

बा	सहित	बाइज़्ज़त, बाकायदा, बाअदब, बाअसर
बद	बुरा, खराब	बदकिस्मत, बदहवास, बदसूरत, बदचलन, बदनाम, बदनीयत
बर	ऊपर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त
बे	बिना	बेईमान, बेरहम, बेशरम बेवफा, बेराह, बेकायदा।
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशर्त।
ला	बिना, रहित	लावारिस, लाइलाज लापरवाह, लापता, लाजवाब
सर	श्रेष्ठ, मुख्य	सरकार, सरपंच, सरताज़, सरहद
हम	साथ	हमराज, हमराह, हमदम, हमदर्द
हर	प्रत्येक	हरदिन, हररोज़, हरवक्त, हरहाल

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अल	निश्चित, इसलिए	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त
ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौके
कम	थोड़ा	कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमज़ोर कमसिन
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशमिज़ाज, खुशकिस्मत, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी
गैर	पराया, नहीं	गैरहाज़िर, गैरज़रूरी, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरमतलब
दर	में	दरअसल, दरमियान, दरहकीकत
ना	बिना नहीं	नादान, नासमझ, नालायक, नाकारा, नासमझ
नीम	आधा	नीमहकीम, नीमहोश, नीमपावाल
ब	साथ, सहित	बखूबी, बदौलत, बदस्तूर, बनाम

*-लेखन भाग-

संवाद लेखन-

प्रश्नः 1.आजकल महँगाई बढ़ती ही जा रही है। इससे परेशान दो महिलाओं की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तरः

रचना – अलका बहन नमस्ते! कैसी हो?

अलका – नमस्ते रचना, मैं ठीक हूँ पर महँगाई ने दुखी कर दिया है।

रचना – ठीक कहती हो बहन, अब तो हर वस्तु के दाम आसमान छूने लगे हैं।

अलका – मेरे घर में तो नौकरी की बँधी-बधाई तनख्वाह आती है। इससे सारा बजट खराब हो गया है।

रचना – नौकरी क्या रोज़गार क्या, सभी परेशान हैं।

अलका – हद हो गई है कोई भी दाल एक सौ बीस रुपये किलो से नीचे नहीं है।

रचना – अब तो दाल-रोटी भी खाने को नहीं मिलने वाली।

अलका – बहन कल अस्सी रुपये किलो तोरी और साठ रुपये किलो टमाटर खरीदकर लाई। आटा, चीनी, दाल, चावल मसाले दूध सभी में आग लगी है।

रचना – फल ही कौन से सस्ते हैं। सौ रुपये प्रति किलो से कम कोई भी फल नहीं हैं। अब तो लगता है कि डाक टर जब लिखेगा तभी फल खाने को मिलेगा।

अलका – सरकार भी कुछ नहीं करती महँगाई कम करने के लिए। वैसे जनता की भलाई के दावे करती है। जमाखोरों पर कार्यवाही भी नहीं करती है।

रचना – नेतागण व्यापारियों से चुनाव में मोटा चंदा लेते हैं फिर सरकार बनाने पर कार्यवाही कैसे करे।

अलका – गरीबों को तो ऐसे ही पिसना होगा। इनके बारे में कोई नहीं सोचता|

2.

प्रश्नः यमुना की दुर्दशा पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तरः

अजय – नमस्कार भाई साहब, शायद आप दिल्ली के बाहर से आए हैं।

प्रताप – नमस्कार भाई, ठीक पहचाना तुमने, मैं हरियाणा से आया हूँ।

अजय – मैं भी अलवर से आया हूँ। तुम यहाँ कैसे?

प्रताप – दिल्ली आया था। सोचा सवेरे-सवेरे यमुना में स्नान कर लेता हूँ पर

अजय – कल मेरा यहाँ साक्षात्कार था और आज कुछ और काम था। मैं भी यहाँ स्नान के लिए आया था।

प्रताप – इतनी गंदी नदी में कैसे नहाया जाए?

अजय – मैंने भी यमुना का बड़ा नाम सुना था, पर यहाँ ती उसका उल्टा निकला।

प्रताप – इसका पानी तो काला पड़ गया है।

अजय – फैक्ट्रियों और घरों का पानी लाने वाले कई नाले इसमें मिल जाते हैं न।

प्रताप – देखो, वे सज्जन फूल मालाएँ और राख फेंककर पुण्य कमा रहे हैं।

अजय – इनके जैसे लोग ही तो नदियों को गंदा करते हैं।

प्रताप – सरकार को नदियों की सफ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

अजय – केवल सरकार को दोष देने से कुछ नहीं होने वाला। हमें खुद सुधरना होगा।

प्रताप – ठीक कहते हो। यदि सभी ऐसा सोचें तब न।

अजय – यहाँ की शीतल हवा से मन प्रसन्न हो गया। अब चलते हैं।

प्रताप – ठीक कहते हो। अब हमें चलना चाहिए।

प्रश्नः 3.बढ़ती गरमी और कम होती वर्षा के बारे में दो मित्रों की बातचीत का संवाद-लेखन कीजिए।

उत्तरः

रवि – रमन, कैसे हो?

रमन – मत पूछ यार गरमी से बुरा हाल है।

रवि – गरमी इसलिए बढ़ गई है क्योंकि वर्षा भी तो नहीं हो रही है।

रमन – 24 जुलाई भी बीतने को है पर बादलों का नामोनिशान भी नहीं है।

रवि – मेरे दादा जी कह रहे थे, पहले इतनी गरमी नहीं पड़ती थी और तब वर्षा भी खूब हुआ करती थी।

रमन – ठीक कह रहे थे तुम्हारे दादा जी। तब धरती पर आबादी कम थी परंतु पेड़-पौधों की कमी न थी।

रवि – वर्षा और पेड़ पौधों का क्या संबंध?

रमन – पेड़-पौधे वर्षा लाने में बहुत सहायक हैं। जहाँ अधिक वन हैं वहाँ वर्षा भी खूब होती है। इससे गरमी अपने आप कम हो जाती है।

रवि – फिर तो हमें भी अपने आसपास खूब सारे पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

रमन – और हरे-भरे पेड़ों को कटने से बचाना भी चाहिए।

रवि – इस गरमी के बाद वर्षा ऋतु में खूब पौधे लगाएँगे।

रमन – यही ठीक रहेगा।